1. 'भारत में महिलाओं की स्थिति कोविड-19 महामारी के समय में बद से बदतर होती जा रही है।' उनकी समस्याओं के समाधान के लिए पर्याप्त उपाय सुझाइए। (10 अंक, 150 शब्द)

**उत्तर:**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **परिचय में, संक्षेप में कोविड-19 महामारी और महिलाओं की स्थिति के बारे में लिखने का प्रयास कीजिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **आप महिलाओं पर महामारी के नकारात्मक प्रभाव पर चर्चा कर सकते हैं।**
* **आप उनकी समस्याओं के समाधान के लिए पर्याप्त उपाय भी सुझा सकते हैं।**
* **निष्कर्ष में महिलाओं की सुरक्षा के महत्व के बारे में लिखने का प्रयास कीजिए।**

कोविड-19 महामारी ने आजीविका के लाखों साधनों को नष्ट कर दिया है और गरीबी में अचानक तीव्र वृद्धि की है और भारत के श्रम बाजार में भारी व्यवधान पैदा किया है। महिलाओं ने सामाजिक और आर्थिक दोनों क्षेत्रों में अत्यधिक समस्याओं का सामना किया है। महामारी से पहले भी, लैंगिक दृष्टि से रोजगार में बड़ा अंतराल था। अच्छी नौकरियों की कमी, प्रतिबंधात्मक सामाजिक मानदंडों और घरेलू काम के बोझ के कारण 75% पुरुषों की तुलना में कामकाजी उम्र की महिलाओं में से केवल 18% कार्यरत थीं। 'स्टेट ऑफ वर्किंग इंडिया 2021: वन ईयर ऑफ कोविड -19' रिपोर्ट से पता चलता है कि महामारी ने स्थिति को और भी बदतर कर दिया है।

**महिलाओं पर महामारी का प्रभाव:**

* **आर्थिक प्रभाव:** राष्ट्रव्यापी तालाबंदी अर्थात लॉकडाउन ने पुरुषों की तुलना में महिलाओं को बहुत अधिक प्रभावित किया। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी प्राइवेट लिमिटेड से प्राप्त डेटा दर्शाते हैं कि लॉकडाउन के दौरान 61% पुरुष श्रमिक अप्रभावित थे जबकि केवल 19% महिलाओं ने ही इस तरह की सुरक्षा का अनुभव किया।
* लॉकडाउन के दौरान नौकरी गंवाने वाली लगभग 47% नौकरीपेशा महिलाएं इसके बाद काम पर नहीं लौटी थीं।
* महिलाओं को अवसरों की कमी का सामना करना पड़ा; औपचारिक वेतनभोगी महिलाओं में से केवल 4% एवं 3% क्रमशः स्व-रोजगार और दैनिक मजदूरी के काम में लग पाईं।
* केवल 11% पुरुषों की तुलना में लगभग आधी महिला कामगार, चाहे वे वेतनभोगी, अनियत/ अनौपचारिक या स्व-रोजगार वाली हों, कार्यबल से हट गईं।
* अनौपचारिक क्षेत्र में, महिलाओं का प्रदर्शन और भी बुरा था; यह नौकरी के नुकसान का 80 प्रतिशत हिस्सा था।
* वैतनिक असमानता और अवैतनिक देखभाल कार्य के बोझ ने बड़ी संख्या में महिलाओं को रोजगार से बाहर किया और गरीबी में धकेल दिया है।

**घरेलू कामों में वृद्धि:** शिक्षण संस्थानों के बंद होने और वर्क फ्रॉम होम संस्कृति के कारण परिवार के सभी सदस्य अपने घरों में कैद हैं, जिससे महिलाओं पर देखभाल का बोझ बढ़ रहा है। इसके परिणामस्वरूप विवाहित महिलाएं और बड़े घरों की कुछ ही महिलाएं काम पर लौट पाई।

* इंडिया वर्किंग सर्वे 2020 में पाया गया कि घरेलू कामों में महिलाओं द्वारा बिताए जाने वाले घंटों की संख्या कई गुना बढ़ गई।
* भुगतान किए गए काम पर बिताए गए घंटों में बिना किसी राहत के घंटों में वृद्धि हुई, जिसके कारण उनमें तनाव, चिंता और अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं पैदा हुईं।

**स्वास्थ्य:** महिलाओं को कोविड-19 संक्रमण का अधिक खतरा था क्योंकि वे गरीब हैं और उनके पास जानकारी और संसाधनों की कमी है या वे स्वास्थ्य और सेवा क्षेत्रों में देखभाल करने वालों और श्रमिकों के रूप में अग्रिम पंक्ति में कार्यरत हैं।

* महिलाएं सभी स्वास्थ्य कर्मियों में एक महत्वपूर्ण अनुपात बनाती है जिनमे 80 प्रतिशत से अधिक नर्स और प्रसाविकाएं/दाईया हैं।
* उनकी पहुंच इंटरनेट या स्मार्टफोन तक कम है, और पितृसत्तात्मक मानदंडों के कारण, वे टीकाकरण के लिए पंजीकरण करने में सक्षम नहीं हो सकती हैं। इसलिए, आंशिक या पूर्ण टीकाकरण वाली महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में कम है।

**शिक्षा:** सयुंक्त राष्ट्र महिला आंकड़ा/यूएन वूमन डेटा से पता चलता है कि महामारी के दौरान लड़कों की तुलना में अधिक लड़कियों को स्कूल छोड़ना पड़ा था और सर्वेक्षण में शामिल 65 प्रतिशत माता-पिता लड़कियों की शिक्षा जारी रखने के अनिच्छुक और लागत बचाने के लिए बाल विवाह का सहारा लेने के लिए सहमत थे।

* यह शिक्षा और रोजगार के अवसरों के बिना युवा महिलाओं की एक पूरी पीढ़ी का निर्माण कर सकता है।

**हिंसा:** लॉकडाउन ने महिलाओं को दुर्व्यवहारियों के साथ घर में फंसा दिया, दुनिया भर में घरेलू हिंसा की दर बढ़ गई। भारत में, घरेलू हिंसा, बाल विवाह, साइबर हिंसा और महिलाओं और लड़कियों की तस्करी की रिपोर्ट महामारी के प्रथम कुछ महीनों के भीतर ही बढ़ गई।

* राष्ट्रीय महिला आयोग (NCW) के आंकड़ों के अनुसार, भारत ने फरवरी और मई 2020 के बीच घरेलू हिंसा में 2.5 गुना वृद्धि दर्ज की है।

**उनकी समस्याओं के समाधान के उपाय:**

* सरकार को महिलाओं के लिए भोजन, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण और नकद सहायता प्रदान करनी चाहिए।
* महिलाओं के लिए शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण, डिजिटल और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उपलब्ध होना चाहिए, जिससे उन्हें रोजगार और छोटे व्यवसायों के लिए मार्ग खोजने में मदद मिलेगी।
* लिंग आधारित हिंसा से पीड़ित लोगों को आश्रय, वित्तीय व कानूनी सहायता और चिकित्सा सहायता होनी चाहिए।
* सरकार और निजी, दोनों क्षेत्रों को स्थायी रोजगार सृजित करने और महिला सशक्तिकरण औ आय को बढ़ावा देने के लिए औपचारिक और अनौपचारिक देखभाल अर्थव्यवस्थाओं में निवेश करना चाहिए।
* संचार अभियानों की मदद से महिलाओं को रोग की रोकथाम और टीकाकरण के बारे में सत्यापित जानकारी दी जानी चाहिए और लिंग आधारित हिंसा के बारे में जन जागरूकता पैदा करनी चाहिए।
* महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) का विस्तार और महिलाओं को लक्षित शहरी रोजगार गारंटी की शुरुआत।
* राष्ट्रीय रोजगार नीति, काम की उपलब्धता और घरेलू जिम्मेदारियों, दोनों से संबंधित महिला कार्यबल की भागीदारी से जुड़ी बाधाओं का व्यवस्थित रूप से समाधान कर सकती है।
* महामारी ने सामाजिक बुनियादी ढांचे और सार्वभौमिक बुनियादी सेवाओं के कार्यक्रमों में पर्याप्त सार्वजनिक निवेश की आवश्यकता को प्रदर्शित किया है जो न केवल सामाजिक क्षेत्र में मौजूदा रिक्तियों को भरेगा बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा, बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल में सार्वजनिक निवेश का विस्तार करेगा और भविष्य के आघातों के लिए तैयार करेगा।

महिलाएं देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा है; घर और कार्यस्थल दोनों पर उनकी सुरक्षा देश के समग्र विकास के लिए महत्वपूर्ण है। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की अधिक भागीदारी से सतत विकास और नए भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

2. एक सामाजिक संस्था के रूप में वर्तमान जातिगत स्वरूप को औपनिवेशिक काल के साथ-साथ स्वतंत्र भारत में तेजी से हुए परिवर्तनों ने बहुत मजबूती से आकार दिया है। टिप्पणी कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

**उत्तर:**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **भूमिका में, भारत में जाति व्यवस्था के बारे में संक्षेप में लिखने का प्रयास कीजिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **आप इस बात पर चर्चा कर सकते हैं कि किस प्रकार औपनिवेशिक काल के साथ-साथ स्वतंत्र भारत ने इसे बहुत मजबूती से आकार दिया है।**
* **निष्कर्ष में, जाति व्यवस्था की वर्तमान स्थिति का उल्लेख करने का प्रयास कीजिए और इसे विभिन्न सरकारी कदमों से जोड़िए।**

जाति एक ऐसी संस्था है, जो भारतीय उपमहाद्वीप से विशिष्ट रूप से जुड़ी हुई है। 'जाति' शब्द पुर्तगाली 'कास्टा' से लिया गया है, जिसका अर्थ है शुद्ध नस्ल। यह एक व्यापक पदानुक्रमित संस्थागत व्यवस्था को संदर्भित करता है जिसके साथ बुनियादी सामाजिक कारक जैसे जन्म, भोजन-साझाकरण, विवाह, आदि जुड़े हैं। इसे स्तरीकरण की एक बंद प्रणाली माना जाता है, जिसका अर्थ है कि एक व्यक्ति की सामाजिक स्थिति किस जाति में पैदा हुई थी।

**कारक जिन्होंने वर्तमान जाति व्यवस्था को आकार दिया:**

* **प्राचीन अतीत (900-500 ईसा पूर्व) की तुलना में,** जहां जाति व्यवस्था वर्ण व्यवस्था पर आधारित थी और इसमें चार प्रमुख विभाजन शामिल थे, जो बहुत विस्तृत या बहुत कठोर नहीं थे, और जन्म से निर्धारित नहीं थे। उत्तर वैदिक और वर्तमान जाति व्यवस्था एक कठोर संस्था बन गई।
* **औपनिवेशिक काल:** विद्वानों ने सहमति व्यक्त की है कि औपनिवेशिक काल के दौरान सभी प्रमुख सामाजिक संस्थाओं, और विशेष रूप से जाति की संस्था में बड़े बदलाव हुए। और उनमें से कुछ ने तो यहां तक ​​कह दिया कि जाति प्राचीन भारतीय परंपरा की अपेक्षा उपनिवेशवाद की उपज है।
* ब्रिटिश प्रशासन ने जानबूझकर एवं अनजाने में भारत में जाति व्यवस्था को प्रभावित किया था।
* ब्रिटिश अधिकारियों ने भारत में जाति व्यवस्था की जटिलताओं को समझने के लिए, जनगणना और सर्वेक्षणों के माध्यम से जाति के बारे में एवं जाति के सामाजिक पदानुक्रम पर जानकारी एकत्र की।
* जाति की सामाजिक धारणाओं पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा; जाति की स्थिति के सर्वेक्षण और आधिकारिक रिकॉर्ड ने इस संस्था को ही बदल दिया; विभिन्न जातियों के सदस्यों द्वारा सामाजिक स्तर पर उच्च पद का दावा करने और अपने दावों के लिए ऐतिहासिक और शास्त्र संबंधी साक्ष्य पेश करने के लिए सैकड़ों याचिकाएं दायर की गईं।
* भू-राजस्व बंदोबस्त और संबंधित व्यवस्थाओं व कानूनों ने उच्च जातियों के प्रथागत (जाति-आधारित) अधिकारों को कानूनी मान्यता दी।
* ब्रिटिश प्रशासन ने भी दलित जातियों, जिन्हें उस समय 'दलित वर्ग' कहा जाता था, के कल्याण में रुचि ली।
* 1935 के भारत शासन अधिनियम ने राज्य द्वारा विशेष व्यवहार के लिए चिह्नित जातियों और जनजातियों की सूची को कानूनी मान्यता प्रदान की।
* राष्ट्रवादी आंदोलन की जन लामबंदी में जाति के विचारों ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जाति प्रगतिशील सुधारकों जैसे महात्मा ज्योतिबा फुले, महात्मा गांधी, बाबासाहेब अम्बेडकर आदि ने लोगों को मौजूदा जातिगत कठोरता के खिलाफ संगठित किया।

**स्वतंत्रता के बाद का काल:** विभिन्न जातियों के लोगों के बीच संबंधों की कठोरता अब कुछ कम हो गई थी। जाति व्यवस्था के कारण समाज में प्रचलित अन्यायपूर्ण कृत्यों पर अंकुश लगाने के लिए सरकार द्वारा कई कदम उठाए गए।

* भारतीय संविधान में देश के नागरिकों के बीच समानता स्थापित करने के लिए कई प्रावधान हैं। उदाहरण के लिए, अनुच्छेद 14 (विधि के समक्ष समानता/समता सुनिश्चित करता है), अनुच्छेद 17 (अस्पृश्यता का उन्मूलन) आदि।
* सदियों से चल रहे भेदभाव को समाप्त करने के लिए निचली जातियों को (एससी, एसटी और ओबीसी के लिए) आरक्षण दिया गया था। लेकिन उनकी आबादी का एक छोटा सा वर्ग ही इनसे लाभान्वित हुआ और आरक्षण पाने के लिए प्रमुख वर्ग /प्रभावशाली या प्रबल वर्ग के लोगों में विरोध बढ़ रहा है, जैसे जाट आरक्षण, मराठा आरक्षण आदि।
* औद्योगीकरण की प्रक्रिया व शहरीकरण की प्रक्रिया ने जाति व्यवस्था की कठोर प्रकृति को कमजोर कर दिया था। हालाँकि, जाति उन्मूलन और समानता के विचार सार्वजनिक स्थानों तक सीमित हैं; निजी क्षेत्र में, विवाह और ऐसे अन्य कार्यों के दौरान जाति व्यवस्था को प्रचलित प्रथा के रूप में देखा जाता है।
* जाति आधारित राजनीतिक दलों (बहुजन समाज पार्टी आदि) के उदय ने भारतीय राजनीति में एक निर्णायक कारक के रूप में कार्य किया और प्रशासन में प्रतिनिधित्व बढ़ाया।
* सरकार ने कई विशेष कार्यक्रम (जैसे स्वास्थ्य देखभाल, कानूनी सहायता आदि) शुरू किए हैं। लेकिन जागरूकता की कमी, भेदभाव, प्रभुत्वशाली जाति के प्रभाव आदि के कारण इन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ सीमित संख्या में ही लोगों को मिला।
* अस्पृश्यता के अपराधीकरण के बावजूद, भारत में जाति आधारित हिंसा और भेदभाव अभी भी प्रचलित है। एनसीआरबी के आंकड़ों (2019) के अनुसार, अनुसूचित जाति समुदायों के सदस्यों के खिलाफ अपराधों में 7.3% और अनुसूचित जनजातियों के खिलाफ 26.5% की वृद्धि हुई। कुछ छोटे-मोटे काम केवल निचली जाति के लोग ही करते हैं जैसे हाथ से मैला ढोना आदि।

वर्तमान समाज अपनी बंद व्यवस्थाओं से परिवर्तन और प्रगति की ओर बढ़ रहा है, जो कि विभिन्न जातियों और पंथों के बावजूद मानव भावना की विशेषता से युक्त है। हालांकि, सरकार को आरक्षण में उप-वर्गीकरण जैसे, रोजगार के अवसर बढ़ाना, शिक्षा और कौशल विकास, लोगों को संवेदनशील बनाने आदि कदम उठाने चाहिए, ताकि देश के कोने-कोने से जाति-आधारित भेदभाव के पूर्ण उन्मूलन और अधिक समावेशी नव भारत निर्माण की दिशा में कदम उठाए जा सकें।

3. स्वयं सहायता समूह ग्रामीण क्षेत्रों में खासकर महिलाओं और हाशिए पर स्थित वर्गों के लिए बदलाव के वाहक के रूप में उभर कर सामने आएं हैं। इस कथन का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

**उत्तर:**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **परिचय में, स्वयं सहायता समूहों के बारे में संक्षेप में लिखने का प्रयास कीजिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **आप लिख सकते हैं कि कैसे एसएचजी ग्रामीण क्षेत्रों में परिवर्तन के वाहक के रूप में कार्य करते हैं, विशेषकर महिलाओं और हाशिए पर स्थित वर्गों के लिए।**
* **आप स्वयं सहायता समूहों की विभिन्न सीमाओं का भी उल्लेख कर सकते हैं।**
* **निष्कर्ष में, स्वयं सहायता समूहों को मजबूत करने के उपाय सुझाने और उन्हें विभिन्न सरकारी पहलों से जोड़ने का प्रयास कीजिए।**

स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) एक छोटा, स्वायत्त, आर्थिक रूप से सजातीय और सादृश्य समूह होता है जिसमें 10 से 20 व्यक्ति शामिल होते हैं। यह लोगों का एक गैर-राजनीतिक समूह होता है जो समान चिंताओं को साझा करते हैं, जो स्वेच्छा से अपने व्यक्तिगत, सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए संयुक्त रूप से काम करने के लिए एक साथ आते हैं। एसएचजी ग्रामीण क्षेत्रों में बदलाव के वाहक बन गए हैं, जो समाज के वंचित वर्ग के जीवन को बदल रहे हैं।

**ग्रामीण क्षेत्रों में एसएचजी की भूमिका- महिलाएं और सीमांत वर्ग:**

* एसएचजी ग्रामीण उत्पादों के वितरण के लिए एक उपयुक्त माध्यम भी बन सकते हैं और ग्रामीण बाजार में नवाचार के तेजी से प्रसार में मदद करते हैं।
* यह महिलाओं में नेतृत्व कौशल विकसित करके उन्हें सशक्त बनाता है और सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में उनकी भागीदारी बढ़ाने में मदद करता है।
* इस बात के कई प्रमाण हैं कि स्वयं सहायता समूहों के गठन का समाज में और साथ ही परिवार में महिलाओं की स्थिति में सुधार करने में गुणक प्रभाव पड़ता है, जिससे उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार होता है और आत्म-सम्मान बढ़ता है।
* एसएचजी के अधिकांश सदस्य समाज के हाशिए पर स्थित वर्गों से हैं और सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थी हैं। यह सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने के लिए विकासात्मक गतिविधियों में उनकी भागीदारी को बढ़ाता है।
* एसएचजी सूक्ष्म वित्त प्रदान कर, बचत की आदत विकसित कर और ऋण तक पहुंच को आसान बनाकर तथा पारंपरिक साहूकारों एवं अन्य गैर-संस्थागत स्रोतों पर निर्भरता को कम करके लोगों के वित्तीय समावेशन में मदद करता है।
* ये समूह रोजगार का एक वैकल्पिक स्रोत प्रदान करके ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी प्रदान करते हैं और कृषि पर निर्भरता को कम करते हैं और सिलाई, किराना आदि जैसे व्यक्तिगत व्यावसायिक उद्यम जैसे सूक्ष्म उद्यम स्थापित करने में सहायता प्रदान करते हैं।
* ये आय और रोजगार सृजन द्वारा ग्रामीण गरीबी उन्मूलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
* स्वयं सहायता समूहों ने सामाजिक पूंजी के निर्माण में मदद की है, जहां लोग एक समूह या संगठन में एक समान उद्देश्य के लिए मिलकर काम करना सीखते हैं।
* यह एक दबाव समूह के रूप में भी कार्य करता है और दहेज, शराब आदि जैसी सामाजिक बुराइयों और प्रथाओं का मुकाबला करने के लिए सामूहिक प्रयासों को प्रोत्साहित करता है।
* यह खपत/उपभोग के पैटर्न को बदलने में भी मदद करता है और प्रतिभागियों को शिक्षा, भोजन, स्वास्थ्य आदि पर अधिक खर्च करने में सक्षम बनाता है।
* यह जागरूकता पैदा करके महिलाओं और बच्चों में शिशु मृत्यु दर को कम करने, बेहतर मातृ स्वास्थ्य आदि में भी मदद करता है।

**एसएचजी की सीमाएं:**

* सदस्यों के बीच ज्ञान, वित्त, और उचित अभिविन्यास और प्रशिक्षण की कमी एसएचजी को उपयुक्त और लाभदायक आजीविका विकल्प पैदा करने के लिए सीमित करती है।
* भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक प्रकृति, आदिम सोच और सामाजिक दायित्व महिलाओं की भागीदारी को सीमित करते हैं और उनके आर्थिक मार्ग को सीमित करते हैं।
* ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सुविधाओं का अभाव है; इसके साथ ही, कई सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और सूक्ष्म-वित्तीय संस्थान सेवा की उच्च लागत के कारण इन संस्थानों को ऋण देने को तैयार नहीं हैं।
* इन समूहों का प्रभाव सीमित है क्योंकि समूह के सदस्य अनिवार्य रूप से सबसे गरीब और हाशिए पर स्थित परिवारों से नहीं आते हैं।
* स्वयं सहायता समूह सदस्यों के आपसी विश्वास और भरोसे के सिद्धांत पर काम करते हैं; इसमें सुरक्षा और स्थायित्व नहीं है, जिसके परिणामस्वरूप केवल कुछ ही स्वयं सहायता समूह सफल होते हैं, जो स्वयं को सूक्ष्म-वित्त के स्तर से सूक्ष्म उद्यमिता तक बढ़ाते हैं।

संतुलित आर्थिक विकास के लिए ग्रामीण क्षेत्रों और हाशिए पर स्थित वर्गों का विकास एक पूर्व शर्त है। एसएचजी ग्रामीण विकास और हाशिए पर स्थित और कमजोर वर्गों के सशक्तिकरण दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सरकार स्वयं सहायता समूह आंदोलन के वृद्धि और विकास के लिए एक सहायक वातावरण बनाकर एक सूत्रधार और प्रोत्साहक (प्रमोटर) के रूप में कार्य कर सकती है। स्वयं सहायता समूहों को सशक्त बनाने के लिए SHG बैंक लिंकेज परियोजना, स्व-नियोजित महिला संघ (SEWA) आदि सही कदम हैं।

4. भारत महान सांस्कृतिक विविधता वाला देश है। राष्ट्रीय पहचान के निर्माण पर सांस्कृतिक विविधता के प्रभाव का मूल्यांकन कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

**उत्तर:**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **भूमिका में, भारत में समृद्ध सांस्कृतिक विविधता के बारे में संक्षेप में लिखने का प्रयास कीजिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **आप लिख सकते हैं कि सांस्कृतिक विविधता राष्ट्रीय पहचान के निर्माण को कैसे प्रभावित करती है।**
* **आप इससे उत्पन्न कुछ चुनौतियों का भी उल्लेख कर सकते हैं।**
* **निष्कर्ष में, चुनौतियों के समाधान करने के उपायों का सुझाव देने का प्रयास कीजिए और भारत में सांस्कृतिक विविधता के समग्र महत्व का उल्लेख कीजिए।**

भारतीय संस्कृति कई संस्कृतियों का एक समामेलन (मिश्रण) है, जो सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से दुनिया के सबसे विविध देशों में से एक है, जिसमें कई भाषाएं, धर्म, संगीत, नृत्य आदि हैं, जो एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न हैं। लोग लगभग 1,632 विभिन्न भाषाएँ और बोलियाँ बोलते हैं जो विभिन्न धर्मों, जातियों और प्रजातियों से संबंधित हैं। भारतीय समाज एक समग्र संस्कृति बनाने के लिए इन विविध और विशिष्ट पहचानों, जातियों, भाषाओं, धर्मों और पाक वरीयताओं (culinary preferences) को सफलतापूर्वक आश्रय दे रहा है।

**राष्ट्रीय पहचान के निर्माण में सांस्कृतिक विविधता का योगदान:**

* भारत की भाषाई विविधता एक विशिष्ट राष्ट्रीय पहचान बनाती है जो दुनिया के किसी अन्य देश में नहीं पाई जाती है। पीपुल्स लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया के अनुसार, लगभग 780 भाषाएँ हैं, और आधिकारिक तौर पर 122 भाषाएँ हैं, जिनमें से 22 भाषाओं को देश की समृद्ध विरासत को बनाए रखते हुए संविधान की आठवीं अनुसूची में जोड़ा गया है।
* जनगणना 2011 के अनुसार, पूरे देश में लगभग हिंदू 96.63 करोड़ (79.8%), मुस्लिम 17.22 करोड़ (14.2%), ईसाई 2.78 करोड़ (2.3%), सिख 2.08 करोड़ (1.7%), बौद्ध 0.84 करोड़ (0.7%), जैन 0.45 करोड़ (0.4%) हैं जो विविधतापूर्ण सांस्कृतिक क्षेत्रों का निर्माण करते हैं। यह धार्मिक विविधता एक विशिष्ट राष्ट्रीय पहचान के विकास में योगदान करती है जहां एक समुदाय के त्योहार पूरे भारत में लोगों द्वारा मनाए जाते हैं।
* विभिन्न मानवशास्त्रीय अध्ययनों के अनुसार, भारतीय जनसंख्या कई नस्लीय समूहों का मिश्रण है, जो एक अद्वितीय अनुवांशिक और नस्लीय विविधता के विकास में योगदान दे रहे हैं।
* भारत को अपनी जातीय विविधता के कारण एक नृवंशविज्ञान संग्रहालय भी कहा जाता है, जो अध्ययन के लिए दुनिया भर के शोधकर्ताओं को आकर्षित करता है। 1901 की जनगणना के अनुसार, भारतीय जनसंख्या लगभग आठ विभिन्न जातीय समूहों का मिश्रण है।
* इस प्रकार, नस्ल, नृजातीयता, भाषा आदि के संदर्भ में उपरोक्त विविधता भारत को एक विशिष्ट राष्ट्रीय पहचान बनाने में मदद करती है जो पूरी दुनिया में विविधता में एकता को दर्शाती है और 'सर्व धर्म समभाव' के अपने पारंपरिक दर्शन को प्रदर्शित करती है।

**सांस्कृतिक विविधता के कारण राष्ट्रीय पहचान के समक्ष चुनौतियाँ:**

* आजादी के बाद से भाषा के आधार पर एक अलग राज्य के गठन की मांग बढ़ रही है, जो भाषाई पहचान के पक्ष में राष्ट्रीय पहचान के लिए खतरा है। उदाहरण: हरियाणा, पंजाब का गठन, मद्रास का विभाजन आदि।
* राजभाषा और शिक्षा के लिए त्रिभाषा सूत्र के रूप में लागू किए जाने के कारण कई दक्षिणी राज्यों (तमिलनाडु आदि) में भी हिंदी विरोधी आंदोलन देखे गए हैं।
* देश के कई हिस्सों में नस्लीय भेदभाव और हिंसा की घटनाएं देखी जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, पूर्वोत्तर क्षेत्र के लोगों के साथ भेदभाव और हिंसा आदि।
* अलग-अलग संस्कृति के लोगों में भी अलगाववादी प्रवृत्ति देखी जा सकती है, जो भारत की एकता के लिए खतरा है। उदाहरण के लिए खालिस्तान की मांग, ग्रेटर नागालिम  (ग्रेटर नागालैंड)  आदि।
* भारत में साम्प्रदायिक दंगों और जाति आधारित भेदभाव की घटनाएं भी आम हैं; ये भारत के धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने पर गंभीर खतरा पैदा करते हैं। उदाहरण: दिल्ली दंगे (2020), मुजफ्फरनगर दंगे (2013) आदि।
* वैश्वीकरण और पश्चिमीकरण की ताकत ने एक वैश्विक और समरूप संस्कृति को बढ़ावा दिया है, जिसके कारण कई लघु सांस्कृतिक परंपराएं विलुप्त हो रही हैं।

भारत विविधता का देश है, जो अपनी अनूठी मिश्रित संस्कृति का निर्माण करता है। सहिष्णुता, धर्मनिरपेक्षता, सभी का कल्याण आदि पारंपरिक भारतीय दर्शन का सार हैं। भारत की विविधता और अद्वितीय राष्ट्रीय पहचान को सुरक्षित करने के लिए सरकार को अवसर और सभी का समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने, जागरूकता पैदा करने, विभिन्न समुदायों के बीच वार्ता को बढ़ावा देने आदि के लिए कदम उठाने चाहिए। एक भारत श्रेष्ठ भारत जैसी पहल भारत की विविधता को बनाए रखने और उसकी रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

5. सोवियत संघ (USSR) के पतन के लिए उत्तरदायी कारकों की चर्चा कीजिए। साथ ही विश्व पर इसके प्रभाव का भी उल्लेख कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

**उत्तर:**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **परिचय में, सोवियत संघ और उसके पतन के बारे में संक्षेप में लिखने का प्रयास कीजिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **आप सोवियत संघ (USSR) के पतन के लिए उत्तरदायी विभिन्न कारकों को लिख सकते हैं।**
* **आप दुनिया पर सोवियत संघ के पतन के प्रभाव का भी उल्लेख कर सकते हैं।**
* **निष्कर्ष में, आप सोवियत संघ के पतन के समग्र प्रभाव को लिख सकते हैं।**

रूसी गृहयुद्ध के परिणामस्वरूप 1922 में सोवियत सोशलिस्ट रिपब्लिक (USSR) का गठन हुआ, जो रूस के नेतृत्व में 15 गणराज्यों का एक अव्यवस्थित संघ था। यह 1922 से 1991 तक वैश्विक राजनीति पर व्यापक नियंत्रण वाला एक सशक्त गुट था; विभिन्न घटनाक्रमों के कारण 1991 में इसका पतन हो गया और यह छोटी इकाइयों में बिखर गया।



**सोवियत संघ (USSR) के पतन के लिए उत्तरदायी कारक:**

* **आर्थिक कारक:** अर्थव्यवस्था का समाजवादी मॉडल 1960 के दशक तक अच्छी तरह से काम करता था, लेकिन उसके बाद, यूएसएसआर में वैश्विक पूंजीवाद के विस्तार के कारण यह स्थिर हो गया।
* संयुक्त राज्य अमेरिका के खिलाफ हथियारों की होड़ और तीसरी दुनिया के कई देशों को आर्थिक समर्थन के कारण रूसी अर्थव्यवस्था शीत युद्ध के दौरान भारी दबाव में थी।
* यूएसएसआर के देश, तकनीकी और आर्थिक रूप से यूएसए से पिछड़ गए।
* यूएसएसआर के देशों में औद्योगीकरण बुनियादी और भारी उद्योगों की नींव पर आधारित था, जहां उपभोक्ता वस्तुओं के उद्योगों की कमी थी जिससे लोगों में व्यापक असंतोष पैदा हुआ।
* **राजनीतिक कारक:** बोल्शेविक क्रांति के बाद, लेनिन ने पार्टी की तानाशाही की स्थापना की, और सरकार निरंकुश हो गई।
* बाद के काल में भी व्यवस्था में कोई खास बदलाव नहीं आया और रूसी लोगों की बुनियादी स्वतंत्रता का दमन जारी रहा।
* रूस के भीतर नस्लों का विभाजन संघर्ष का एक प्रमुख कारण बना रहा। गोर्बाचेव ने व्यवस्था में ढील दी, और विभिन्न नस्लीय समूहों ने अपना सिर उठाया, जिससे इस व्यवस्था का पतन हो गया।
* उन्होंने 'पेरेस्त्रोइका' (आर्थिक पुनर्गठन) और 'ग्लासनोस्ट' (विचारों का खुलापन) जैसी विभिन्न उदार नीतियों की शुरुआत की, जिन्होंने यूएसएसआर के पतन में भूमिका निभाई।
* **सांस्कृतिक कारक:** समाजवादी व्यवस्था अपने लोगों के लिए निरंतर उच्च जीवन स्तर बनाए रखने में विफल रही।
* अन्य यूरोपीय देशों के साथ, विशेष रूप से पश्चिमी जर्मनी और पूर्वी जर्मनी के बीच एक स्पष्ट अंतर था, जिसने एक बड़ा असंतोष पैदा किया।
* रूस, बाल्टिक गणराज्य आदि जैसे विभिन्न देशों में राष्ट्रवाद का उदय हुआ, जो विघटन का सबसे महत्वपूर्ण और तात्कालिक कारण था।
* **बाह्य कारक:** पूंजीवादी शक्ति और उसके सहयोगियों के प्रोत्साहन ने क्षेत्र में परिवर्तन को लगातार प्रभावित किया और नई सरकार को आर्थिक और तकनीकी सहायता प्रदान की।

**सोवियत संघ के पतन का विश्व पर प्रभाव:**

* सोवियत संघ के विघटन ने शीत युद्ध के टकराव और दो महाशक्तियों के बीच वैचारिक विवादों को समाप्त कर दिया।
* यूएसएसआर के विघटन के बाद कई नए देश उभरे। उदाहरण के लिए, बाल्टिक देशों ने नाटो आदि के साथ गठबंधन किया।
* यूएसएसआर के विघटन के बाद विश्व में शक्ति समीकरण बदल गया, द्विध्रुवीय विश्व एकध्रुवीय हो गया और संयुक्त राज्य अमेरिका एक महाशक्ति के रूप में उभरा।
* विश्व में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था हावी हो गई, विश्व व्यापार संगठन, आईएमएफ आदि जैसे विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने इस सिद्धांत पर काम किया और नवगठित और विकासशील देशों को आर्थिक सहायता प्रदान की।
* विश्व शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए यूएसएसआर के विघटन के बाद विभिन्न सैन्य गठबंधनों को समाप्त कर दिया गया था।
* बहुध्रुवीय दुनिया बाद के दौर में उभरने लगी, जहां कोई एक शक्ति हावी नहीं हो सकती थी, और देशों का एक समूह विश्व राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता था। उदाहरण: NAM देश, BRICS, G7, G20 आदि।

कई दीर्घकालिक और अल्पकालिक कारण थे जिनके कारण यूएसएसआर का विघटन हुआ। इसने विश्व राजनीति को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से प्रभावित किया है। इसने बहुध्रुवीय विश्व की एक नई व्यवस्था को जन्म दिया और दो गुटों के कारण विभाजित देशों के एकीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

6. राष्ट्र संघ अंतरराष्ट्रीय विवादों को सुलझाने और विश्व शांति सुनिश्चित करने में विफल रहा। इस कथन का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

उत्तर:

प्रश्न को डिकोड करना:

* भूमिका में, राष्ट्र संघ के बारे में संक्षेप में लिखने का प्रयास कीजिए।
* मुख्य भाग में,
* आप यह लिख सकते हैं कि कैसे राष्ट्र संघ अंतर्राष्ट्रीय विवादों को सुलझाने और विश्व शांति सुनिश्चित करने में विफल रहा है।
* आप विवादों को सुलझाने में इसकी सफलता का भी उल्लेख कर सकते हैं।
* निष्कर्ष में, इसके समग्र महत्व और परिणामों का उल्लेख करने का प्रयास कीजिए।

**राष्ट्र संघ की स्थापना 1920 में प्रथम विश्व युद्ध के अंत में विजयी सहयोगी शक्तियों की पहल पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए एक संगठन के रूप में की गई थी। पेरिस शांति सम्मेलन (1919) में, देशों ने सर्वसम्मति से सहमति व्यक्त की और राष्ट्र संघ की प्रसंविदा की विषयवस्तु तैयार की।**



अंतर्राष्ट्रीय विवादों को सुलझाने और विश्व शांति सुनिश्चित करने में राष्ट्र संघ की विफलता:

* **राष्ट्र संघ की प्रसंविदा को अलग नहीं रखा गया था; इसे शांति समझौते का अभिन्न अंग बनाया गया था। वर्साय की संधि का विरोध करने वाले देशों का राष्ट्र संघ ने अनुसमर्थन नहीं किया था।**
* **जापान, जर्मनी आदि देशों ने राष्ट्र संघ को छोड़ दिया, जिसने महाशक्तियों की अनुपस्थिति के कारण इसे कमजोर बना दिया। इसे अमेरिका ने खारिज कर दिया था, जिससे इसे गहरा आघात लगा था।**
* **इसमें इंग्लैंड और फ्रांस जैसे कुछ देशों का प्रभुत्व था, जिसके परिणामस्वरूप संगठन में विभिन्न अन्य देशों के विश्वास की क्षति हुई।**
* **राष्ट्र संघ की अपनी कोई सैन्य शक्ति नहीं थी और अप्रभावी थी, जिससे सुरक्षा के विचार को बनाए रखना मुश्किल हो गया। इसे आर्थिक प्रतिबंधों के रूप में एक प्रभावी हथियार दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप अप्रभाविता नहीं हुई।**
* **महामंदी के आर्थिक संकट की शुरुआत के साथ, विभिन्न दक्षिणपंथी सरकारें सत्ता में आईं जिन्होंने नियमों का पालन करने से इनकार कर दिया और राष्ट्र संघ की कमजोरी को दर्शाया।**
* **दुनिया में संकीर्ण राष्ट्रवाद की व्यापकता भी राष्ट्र संघ की विफलता के लिए जिम्मेदार थी। वे राष्ट्र संघ या विश्व हितों के लिए अपने राष्ट्रीय हितों का बलिदान करने के लिए तैयार नहीं थे।**
* **निरस्त्रीकरण आयोग ने सदस्य राज्यों को आयुधों को कम करने के लिए राजी करने के लगभग असंभव कार्य में कोई प्रगति नहीं की, भले ही सभी ने प्रसंविदा से सहमत होने पर ऐसा करने का वादा किया था।**

राष्ट्र संघ की सफलता:

* आर्थिक और सामाजिक कार्य: **अंतर्राष्ट्रीय श्रम आयोग (ILO) ने अंतर्राष्ट्रीय श्रम बाजार को विनियमित किया और मजदूरों के हितों को सुरक्षित करने में मदद की, जैसे कि न्यूनतम मजदूरी तय करना, काम करने की स्थिति को विनियमित करना आदि काम किए।**
* **शरणार्थी संगठन ने युद्ध बंदियों और सामूहिक अपराधों के शिकार लोगों की मदद की। उदाहरण के लिए, रूस में युद्धबंदियों के शरणार्थियों ने यहूदी लोगों की मदद की आदि।**
* **इसने विभिन्न स्वास्थ्य संगठनों के लिए धन भी उपलब्ध कराया और रूस में टाइफस जैसी महामारियों के दौरान मानवीय कार्यों में मदद की।**
* **मेंडेट कमीशन के पास सदस्य देशों को मेंडेट के रूप में दिए गए क्षेत्रों के शासन की निगरानी की जिम्मेदारी थी। उदाहरण के लिए, जर्मनी में सार क्षेत्र (SAAR) आदि।**
* अंतर्राष्ट्रीय विवादों का समाधान: राष्ट्र संघ ने विभिन्न देशों के बीच छोटे-मोटे विवादों को निपटाने **में आंशिक सफलता हासिल की।**
  + **जब ग्रीस ने बुल्गारिया पर आक्रमण किया, तो उसने ग्रीस को बुल्गारिया को मुआवजा देने के लिए मजबूर किया।**
  + **इसने पेरू और कोलंबिया के बीच क्षेत्रीय विवादों को भी सुलझाया।**
  + **इसने आलैंड द्वीप समूह को लेकर फिनलैंड और स्वीडन के बीच के झगड़े को सुलझा लिया।**

**राष्ट्र संघ अपनी आंतरिक कमजोरी और संरचना के कारण विवादों में अपने निर्णयों को लागू करने और विश्व शांति सुनिश्चित करने में विफल रहा। लेकिन इसने दुनिया भर में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक और कल्याणकारी कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक लागू किया है।**

7. उन्नीसवीं शताब्दी की अंतिम तिमाही में आर्थिक व्यवस्था के परिणामस्वरूप उपनिवेशों और औपनिवेशिक प्रतिद्वंद्विता की खोज, साम्राज्यवाद के विकास के लिए जिम्मेदार थी। टिप्पणी कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

उत्तर:

प्रश्न को डिकोड करना:

* भूमिका में, साम्राज्यवाद के बारे में संक्षेप में लिखने का प्रयास कीजिए।
* मुख्य भाग में,
* आप ऐसे विभिन्न कारकों को लिख सकते हैं जिनसे साम्राज्यवाद का विकास होता है।
* निष्कर्ष में, इसके परिणामों का उल्लेख करने का प्रयास कीजिए।

**साम्राज्यवाद शब्द का अर्थ किसी देश द्वारा अपनी सीमाओं के बाहर के क्षेत्रों के राजनीतिक और आर्थिक जीवन पर शक्ति, नियंत्रण या शासन का विस्तार करने से है। ऐसा सैन्य या अन्य माध्यमों से और विशेष रूप से उपनिवेशवाद के माध्यम से किया जा सकता है। देशों के बीच प्रतिद्वंद्विता और अधिक उपनिवेशों पर कब्जा करने की प्रतिस्पर्धा साम्राज्यवाद के विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक थी।**

साम्राज्यवाद के विकास को प्रेरित करने वाले कारक:

* औद्योगिक क्रांति: यूरोपीय देशों में औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर **उत्पादन में वृद्धि हुई, जिसके बाद परिवहन और संचार के साधनों जैसे कि टेलीग्राफ सिस्टम, रेलवे आदि क्षेत्रों में बड़ी प्रगति हुई। इससे उपनिवेशों और मातृदेश अथवा शासक देश के बीच माल और कच्चे माल की आवाजाही में तेजी आने से साम्राज्यवाद के विकास में सुविधा हुई।**
* राष्ट्रीय सुरक्षा: यूरोपीय राजनीतिक समूहों के बीच राष्ट्रीय सुरक्षा और आत्मनिर्भरता की **भावना ने बड़े पैमाने पर औपनिवेशिक साम्राज्यवाद को प्रभावित किया।**
* राष्ट्रवाद: उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में यूरोप में चरम राष्ट्रवादी आदर्श देखे गए। विभिन्न **राष्ट्रों ने अपनी जाति, संस्कृति और भाषा आदि पर गर्व किया और वे अन्य देशों से श्रेष्ठ महसूस करने लगे। उन्होंने साम्राज्यवाद को युग और गौरव के फैशन से जोड़ा।**
  + **यूरोपीय लोग 'श्वेतों के उत्तरदायित्व**’ **सिद्धांत में विश्वास करते थे, जो उन्हें अफ्रीका और एशिया के पिछड़े और असभ्य मूल निवासियों को सभ्य बनाने की जिम्मेदारी देता है।**
* शक्ति संतुलन: यह साम्राज्यवाद के विकास के लिए प्रेरक कारकों में से एक था। राष्ट्रों **को अपने पड़ोसियों और प्रतिस्पर्धियों के साथ संतुलन हासिल करने के लिए बड़ी संख्या में उपनिवेशों का अधिग्रहण करने के लिए मजबूर होना पड़ा।**
* नए मार्गों की खोज: यात्रियों द्वारा अफ्रीकी और एशियाई महाद्वीपों के लिए नए मार्गों की खोज ने साम्राज्यवाद की भावना को बढ़ावा दिया**। इसने व्यापारियों और सैनिकों के लिए देशों की प्रचुर संपत्ति के दोहन का मार्ग प्रशस्त किया और उनके मुनाफे में वृद्धि की।**
* जनसंख्या में वृद्धि: इसके परिणामस्वरूप बहुत बड़े पैमाने पर बेरोजगारी हुई और **यूरोपीय लोगों को विदेशों में नई भूमि और काम-धंधे की तलाश में प्रवास करने के लिए मजबूर होना पड़ा।**
* अराजकता की स्थिति: प्रथम विश्व युद्ध से पहले देशों के बीच शांति और सुरक्षा बनाए **रखने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रों के लिए कानून बनाने, विनियमित करने और लागू करने के लिए कोई अंतरराष्ट्रीय संगठन नहीं था। इसने औपनिवेशिक दौड़ का समर्थन किया और साम्राज्यवाद को बढ़ावा दिया।**

1914 तक, विश्व के लगभग सभी हिस्से साम्राज्यवाद के अप्रत्यक्ष नियंत्रण में आ गए थे, जिसका देशों पर बहुत बड़ा सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव पड़ा था। साम्राज्यवाद के परिणाम आर्थिक पिछड़ेपन और क्षेत्रों में स्थानीय उद्योगों का विनाश के रूप में सामने आने लगे था, जिसने उपनिवेश के लोगों को गरीब बना दिया। यह नस्ल की श्रेष्ठता और **श्वेतों के उत्तरदायित्व** के सिद्धांत के विचार को प्रस्तुत करके भी नस्लीय अहंकार और भेदभाव को पैदा करता है। इन परिणामों ने, अन्य कारकों के साथ, देशों के मध्य साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष को जन्म दिया।

**8. 1949** की चीनी क्रांति के कारणों और परिणामों का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

उत्तर:

प्रश्न को डिकोड करना:

* भूमिका में **1949** की चीनी क्रांति के बारे में संक्षेप में लिखने का प्रयास कीजिए।
* मुख्य भाग में,
  + आप चीनी क्रांति के विभिन्न कारण लिख सकते हैं।
  + आप क्रांति के प्रभाव पर भी चर्चा कर सकते हैं।
* निष्कर्ष में, समग्र कारणों का उल्लेख करने और उन्हें वर्तमान स्थिति से जोड़ने का प्रयास कीजिए।

**चीनी क्रांति या चीनी गृहयुद्ध, (1945-49), चीन के नियंत्रण के लिए सैन्य संघर्ष, च्यांग काई-शेक के नेतृत्व में राष्ट्रवादियों और माओत्से तुंग के तहत कम्युनिस्टों के बीच छिड़ा था। जमींदारों और पूंजीपतियों को उखाड़ फेंकने के लिए लाखों किसान और मजदूर उठ खड़े हुए। यह 1921 में अपनी स्थापना और चीनी गृहयुद्ध के बाद से चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सत्ता में आने के अभियान की परिणति थी।**

चीनी क्रांति के कारण:

* उस समय बड़े पैमाने पर असंतोष और ग्रामीण समाज का दिवालियापन हो रहा था, जिसने संभावित क्रांतिकारियों की एक अटूट आपूर्ति पैदा की, और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी जिसने इस विवेकहीन बल को उद्देश्य और दिशा प्रदान की।
* किसानों की सबसे बुनियादी जरूरतों को पूरा करने और उन्हें सेना की अत्यधिक हिंसा से बचाने के लिए कोई कदम नहीं उठाए गए।
* कृषि प्रणाली में सुधार और विस्तार या भूमि कर और भूमि लगान के कारण हुई निराशा को कम करने के लिए कोई कदम नहीं उठाए गए। इससे चीन में ग्रामीण सामाजिक संघर्ष बढ़ा, जिसने चीनी क्रांति में सबसे अधिक योगदान दिया।
* किसान जनता के दो विरोधी पक्ष थे, और समाज में जमींदार उच्च वर्ग भी था। जिसमें किसानों को भीषण गरीबी और शोषण का सामना करना पड़ा।
* केएमटी प्रशासन अक्षम और भ्रष्ट था; धन का एक बड़ा हिस्सा अधिकारियों की जेब में जाता था।
* इसकी आर्थिक और प्रशासनिक नीतियों के परिणामस्वरूप मुद्रास्फीति सरपट दौड़ गई, जिसने जनता के लिए कठिनाई पैदा की और कई मध्यम वर्ग को बर्बाद कर दिया।
* माओ ज़ेदोंग और झोउ एन-लाई जैसे चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता, केएमटी की कमजोरियों का फायदा उठाने और लोगों का समर्थन हासिल करके अपनी स्थिति को मजबूत करने और पूरे चीन पर जल्दी से नियंत्रण स्थापित करने के लिए काफी चतुर साबित हुए थे।
* पश्चिमी देशों के साथ दशकों की असमान संधियों और बढ़ती जापानी शक्ति के रूप में बाहरी प्रभाव जिसमें चीन ने प्रमुख बंदरगाहों, शहरों और प्रभाव क्षेत्रों पर नियंत्रण खो दिया था।
* जापान द्वारा लगातार आक्रमण होते रहे जो क्रांति के मुख्य कारणों में से एक था।

चीनी क्रांति का प्रभाव:

* **1949 में क्रांति की परिणति हुई, जिससे चीन जनवादी गणराज्य की स्थापना हुई, जिसने चीन में वर्ग संबंधों को मौलिक रूप से बदल दिया।**
* **इसका परिणाम किसान, मजदूर और क्रांतिकारी संवर्ग वर्गों के बच्चों की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने और क्रांति के समय विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों से वंचित लोगों की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने में हुआ।**
* **चीनी सरकार ने लक्षित लोगों और वर्ग के हितों को बढ़ावा देने के लिए वर्ग-आधारित नीतियों की एक श्रृंखला लागू की थी।**
* **इसने कुलीन वर्ग और गरीब लोगों के बीच की बाधाओं और सामाजिक वर्गों की क्रम व्यवस्था को तोड़ दिया और सभी तक ज्ञान की पहुँच सुगम करवा दी।**
* **इसने धर्म का दमन करके वैज्ञानिक ज्ञान को भी बढ़ावा दिया।**
* **किसानों को अधिकार दिया गया और उन्हें उत्पादन बढ़ाने के लिए उत्पादन के मामलों पर अधिक नियंत्रण दिया गया।**
* **सांस्कृतिक क्रांति के बाद, चीजें स्थिर होने लगीं और चीनी अर्थव्यवस्था की स्थिति में काफी सुधार हुआ।**
* **सरकार ने सुधारों की एक श्रृंखला के माध्यम से देश में कुछ व्यवस्था बनाने की कोशिश की और वेतन बोनस और वेतन में वृद्धि करके श्रमिकों के हितों की अपील की।**
* **देश के आधुनिकीकरण को गति देने के लिए नेताओं ने बड़ी मात्रा में पूंजी के साथ निवेश किया, यह दृष्टिकोण में बदलाव का संकेत था ।**
* **इसने चीन के ग्रामीण क्षेत्रों में औद्योगीकरण को बढ़ावा दिया और शहरी और ग्रामीण लोगों के बीच आर्थिक अंतर को कम किया।**
* **देश की सर्वोच्च प्राथमिकता के रूप में आधुनिकीकरण, और अन्य सभी कार्यों को आर्थिक विकास के अधीन किया जाना है।**
* **चीन इस क्षेत्र में एक अधिक शक्तिशाली देश बन गया और एक वैश्विक नेता बन गया। अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और राजनीति में भागीदारी कर इसने एक तीव्र मोड़ लिया।**

**चीनी क्रांति विश्व इतिहास की एक परिवर्तनकारी घटना थी। इसके परिणाम हमारी आधुनिक दुनिया को आकार देना जारी रखते हैं। यह चीन में विदेशी साम्राज्यवाद, विशेषाधिकार और असमानता, शोषण एवं भ्रष्टाचार, राष्ट्रीय एकता, चीन की सैन्य एवं आर्थिक कमजोरी आदि जैसे विभिन्न कारकों के कारण हुआ था। इसका न केवल चीन के लोगों पर बल्कि विश्व राजनीति पर भी बहुत प्रभाव पड़ा।**

9. वैश्वीकरण से भारत में सांस्कृतिक एकरूपता आती है। क्या आप सहमत हैं? साथ ही, अपने उत्तर का औचित्य सिद्ध कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

उत्तर:

प्रश्न को डिकोड करना:

* भूमिका में,वैश्वीकरण के बारे में लिखने का प्रयास कीजिए।
* मुख्य भाग में,
* आप लिख सकते हैं कि कैसे वैश्वीकरण से भारत में सांस्कृतिक एकरूपता आई है।
* आप भारत की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान (विविधता) का भी उल्लेख कर सकते हैं।
* निष्कर्ष में, वैश्वीकरण के समग्र प्रभाव का उल्लेख करने का प्रयास कीजिए।

वैश्वीकरण **एक बहुआयामी अवधारणा है जिसमें राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ शामिल होती हैं। यह विश्व के विभिन्न हिस्सों में देशों के तेजी से एकीकरण और विचारों, पूंजी, वस्तुओं और लोगों के प्रवाह को बढ़ावा देता है। इसने संस्कृति और परंपराओं के मिश्रण के कारण वैश्विक संस्कृति और वैश्विक गांव के उद्भव में मदद की।**

वैश्वीकरण से भारत में सांस्कृतिक एकरूपता आती है:

* **संस्कृतियां स्थिर नहीं होतीं; यह हर समय विकास की प्रक्रिया में रहती हैं। यह बाहरी ताकतों से प्रभावित हो जाती है और उसी के अनुसार खुद को संशोधित करती है।**
* **भारतीय राजनीतिक विचार और संविधान विश्व में विभिन्न राजनीतिक विचारकों और प्रथाओं से प्रभावित हैं। लिबर्टी अथवा स्वच्छंदता की अवधारणा फ्रांसीसी क्रांति से ली गई है, अमेरिकी बिल ऑफ राइट्स से मौलिक अधिकार आदि लिए गए हैं।**
* **वैश्विक बहुराष्ट्रीय निगमों और कंपनियों की भारत में बहुत मजबूत पकड़ है जिसने एक नई कॉर्पोरेट संस्कृति और शहर का निर्माण किया। इसने रोजगार सृजन की संरचना और कार्य संस्कृति को भी बदल दिया है, जो पारंपरिक कृषि अर्थव्यवस्था से अलग है।**
* **भारत में भोजन और कपड़ों का पैटर्न भी विभिन्न वैश्विक खाद्य पैटर्न का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरण: पिज़्ज़ा, बर्गर आदि भारतीयों में लोकप्रिय हैं।**
* **वैश्विक फैशन का प्रभाव शहरी क्षेत्रों, फिल्मों, फैशन उद्योगों आदि में देखा जा सकता है।**
* **जीन्स, टीशर्ट, शर्ट, कपड़े आदि, लोगों की दैनिक जीवन शैली का एक अभिन्न अंग बन गए हैं।**
* **पश्चिमी फिल्में और संगीत भी भारत में लोगों के बीच लोकप्रिय हैं। केटी पेरी, जस्टिन बीबर, बेयॉन्से, टॉम क्रूज़, जैकी चेन आदि जैसी कई वैश्विक हस्तियों की भारतीय फैन फॉलोइंग बहुत बड़ी है।**
* **विभिन्न भारतीय शिक्षण संस्थानों में विभिन्न पश्चिमी भाषाओं जैसे फ्रेंच, मंदारिन, रूसी आदि को पढ़ाया जाता है। सबसे बढ़कर, अंग्रेजी भारत में एक आधिकारिक भाषा है। यह विभिन्न स्थानीय भाषाओं के विलुप्त होने का भी कारण बना।**
* **भारत में पूंजीवाद, समाजवाद और साम्यवाद की नीतियों, लोकप्रियकरण में आर्थिक एकरूपता दिखाई देती है। भारतीय बाजार भी विभिन्न वैश्विक झटकों की चपेट में आ जाते हैं।**

भारत की अनूठी सांस्कृतिक पहचान:

* **भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जिसकी अपनी अनूठी राजनीतिक व्यवस्था है, जिसे स्थानीय वातावरण और परिस्थितियों के आधार पर ढाला गया है। उदाहरण के लिए, सबसे बड़ा लिखित संविधान, 5वीं और 6वीं अनुसूची का प्रावधान, PESA आदि।**
* **भारतीय शिल्प, हथकरघा, जनजातीय लोगों द्वारा निर्मित सामान आदि का एक बड़ा विदेशी बाजार है, जो भारतीय निर्यात का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।**
* **दुनिया के विभिन्न देशों में लोगों के बीच डोसा, समोसा, इडली, चाट आदि जैसे खाद्य पदार्थ लोकप्रिय हैं।**
* **पारंपरिक चिकित्सा और उपचार पद्धतियां जैसे आयुर्वेद आदि, दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं, और उनमें से कुछ को विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा कई बीमारियों के इलाज में भी मान्यता प्राप्त है।**
* **योग और ध्यान कई देशों में लोकप्रिय हैं। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पूरी दुनिया में मनाया जाता है।**
* **भारतीय सांस्कृतिक प्रथाएं जैसे नृत्य, त्यौहार (होली, दिवाली आदि) दुनिया में लोकप्रिय हैं। कुंभ मेला और कई नृत्यों, नाटकों को यूनेस्को द्वारा वैश्विक अमूर्त सांस्कृतिक सूची के हिस्से के रूप में मान्यता प्राप्त है।**
* **बौद्ध धर्म, जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई, दक्षिण पूर्व एशिया के लोगों के बीच एक लोकप्रिय धर्म है।**
* **बॉलीवुड फिल्मों का वैश्विक बाजार में बहुत बड़ा बाजार और मांग है।**

**वैश्वीकरण ने पूरी दुनिया में संस्कृतियों का मिश्रण किया है और पूरी दुनिया में एक वैश्विक और समरूप संस्कृति का गठन किया है। भारत इन प्रभावों से अछूत नहीं है, लेकिन उसने इसे अपनाकर और संशोधित करके अपनी अनूठी संस्कृति बनाई है।**

10. वैश्वीकरण के आलोक में विकासशील देशों में राज्य की बदलती भूमिका के प्रभाव का मूल्यांकन कीजिए। (10 अंक, 150 शब्द)

**उत्तर:**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **भूमिका में विकासशील देशों में राज्य की भूमिका और वैश्वीकरण के प्रभाव के बारे में लिखने का प्रयास कीजिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **आप लिख सकते हैं कि कैसे वैश्वीकरण ने भारत में राज्य की भूमिका को बदल दिया है।**
* **आप विकासशील देशों में राज्यों के लिए चुनौतियों का भी उल्लेख कर सकते हैं।**
* **निष्कर्ष में, इसे भारत के रुख से जोड़ने का प्रयास कीजिए।**

**विकासशील** देशों में, राज्य कल्याणकारी राज्य के सिद्धांत पर काम करता है, लेकिन वैश्वीकरण के आगमन के साथ, यह अब एक न्यूनतम राज्य के रूप में काम कर रहा है जो कानून और व्यवस्था के रखरखाव, नागरिकों की सुरक्षा आदि जैसे कार्य करता है। अब बाजार ही सामाजिक और आर्थिक प्राथमिकताएं निर्धारित करता है।

**वैश्वीकरण के कारण राज्य की बदली हुई भूमिका:**

* वैश्वीकरण ने राज्य की क्षमता को कम कर दिया है, अर्थात सरकारों की वह करने की क्षमता कम हो गई है जो वे पहले से करते आए हैं। बाजार की ताकतें, वैश्विक प्रभाव आदि विकासशील देशों में सामाजिक-आर्थिक स्थिति को प्रभावित करती हैं।
* देशों में सामाजिक और आर्थिक प्राथमिकताओं को तय करने में बाजार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
* विभिन्न अंतरराष्ट्रीय निकाय और बहुराष्ट्रीय कंपनियां नीति निर्माण, कार्यान्वयन आदि के संदर्भ में सरकार के कामकाज को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, संयुक्त राष्ट्र, रामसर कन्वेंशन, पेरिस जलवायु समझौता आदि।
* पुराना कल्याणकारी राज्य, जो सार्वजनिक उपक्रमों के माध्यम से वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और वितरण में भी शामिल था, अब कानून और व्यवस्था और नागरिकों की सुरक्षा को बनाए रखने पर अधिक ध्यान दे रहा है।
* राज्य अब व्यापार और उद्योगों के विकास में शामिल होने के बजाय इसे सुविधाजनक और सुगम बना रहा है। उदाहरण के लिए, सरकार द्वारा व्यापार करने में सुगमता आदि।
* अब यह विभिन्न कल्याणकारी कार्यों से पीछे हट गया है जो यह आर्थिक और सामाजिक कल्याण के स्तर पर किया करते थे।

**विकासशील देशों में राज्य के लिए चुनौतियां:**

* विकासशील देश विकसित देशों के साथ उच्च और असमान प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहे हैं। राज्य के लिए उस परिदृश्य में विकास को बनाए रखना मुश्किल है।
* विकसित देश असमान व्यापार समझौतों, संरक्षणवाद आदि का उपयोग करते हैं, जो विकासशील देशों के छोटी व्यवसायिक व्यवस्थाओं के लिए कठिनाइयाँ पैदा करता है। उदाहरण के लिए: यूएसए- एच-1बी वीजा नियम और विकासशील देशों की सूची से भारतीयों को हटाना आदि।
* वैश्वीकरण के कारण से स्थानीय बाजार में सस्ते माल की डंपिंग भी हुई, जो स्थानीय वस्तुओं और उत्पादकों पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। उदाहरण के लिए, भारतीय बाजार में चीनी सामान आदि।
* विकसित देश कई अंतर्राष्ट्रीय संगठन जैसे संयुक्त राष्ट्र, डब्ल्यूएचओ, विश्व व्यापार संगठन आदि पर हावी रहते हैं और अपने हितों को बढ़ावा देते हैं, जो कभी-कभी विकासशील देशों पर नकारात्मक प्रतिबंध, दायित्व, कानून आदि लागू करते हैं।
* वैश्विक कंपनियों और व्यापारिक दिग्गजों ने अपने हितों के आधार पर नीतियों और कानूनों को बदलने के लिए राज्य पर दबाव डाला और कभी-कभी उनका गलत इस्तेमाल भी हो जाता है।
* वे कभी-कभी देश के घरेलू नियमों की अवहेलना भी करते हैं। उदाहरण के लिए, इंटरनेट विनियमन पर हाल ही में ट्विटर का मामला, वोडाफोन मामला आदि।

वैश्वीकरण की ताकतें विकासशील देशों में राज्य की भूमिका को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से प्रभावित करती हैं। चुनौतियों से निपटने के लिए, भारत जैसे विकासशील देश अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करने और नियम-आधारित व्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में सुधार के लिए वैश्विक मंचों पर अपनी आवाज उठा रहे हैं।

11. सोशल मीडिया एक ऐसी दुनिया है जो तेजी से विकसित हो रही है। इस संदर्भ में भारतीय समाज पर सोशल मीडिया के प्रभाव की विवेचना कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

**उत्तर:**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **परिचय में, हाल के दिनों में सोशल मीडिया के विकास के बारे में संक्षेप में लिखने का प्रयास कीजिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **आप समाज पर सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को लिख सकते हैं।**
* **आप नकारात्मक प्रभाव को दूर करने के लिए कुछ उपाय सुझा सकते हैं।**
* **निष्कर्ष में आप समाज के विकास के लिए सोशल मीडिया के महत्व के बारे में लिख सकते हैं।**

2019 में, भारत में इंटरनेट का उपयोग करने वाले 574 मिलियन उपयोगकर्ता थे; यह चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा ऑनलाइन बाजार है। भारत में फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि सहित ऑनलाइन सोशल मीडिया (OSM) सेवाओं में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। इन सेवाओं के अलावा, व्हाट्सएप जैसी वन-टू-वन संदेश सेवा के 200 मिलियन उपयोगकर्ता हैं, जो दुनिया में सबसे अधिक है। इसने लोगों के संवाद करने के तरीके को बदल दिया है और भारतीय समाज के ताने-बाने को बुनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

**समाज पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव:**

* सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने वंचित और सीमांत लोगों को अन्याय और असमानता के खिलाफ आवाज उठाने के लिए एक मंच प्रदान किया और कई मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा करने में मदद की। उदाहरण के लिए, LGBTQ अधिकार आदि।
* यह वास्तविक समय की जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है और मूल्यवान स्थितिजन्य और क्षेत्र-विशिष्ट जानकारी प्रदान करता है। यह आपदा प्रबंधन, नीति निर्माण आदि में मदद करता है। उदाहरण: ट्विटर
* सोशल मीडिया ने विभिन्न प्लेटफॉर्म जैसे यूट्यूब आदि पर ऑनलाइन स्ट्रीमिंग जैसे रोजगार के नए अवसर पैदा किए।
* यह बिना ब्रिक एंड मोर्टार प्रणाली के व्यवसाय शुरू करने का एक सस्ता तरीका है।
* इसने व्यवसायों और उपभोक्ताओं के बीच संपर्क को भी बढ़ाया। व्यवसायों द्वारा अपने ग्राहकों के लिए इस तरह की वार्ता और प्रतिक्रिया बाजार को जल्दी से समझ सकती है, नई रणनीति अपना सकती है, और गतिशील ग्राहक की रूचि और मांगों के अनुरूप हो सकती है।
* इसने लोगों में अपनेपन की भावना भी पैदा की, जहां वे दूसरों की चिंताओं को समझ सकें और उनकी मदद कर सकें। उदाहरण: कोविड19 महामारी के दौरान, लोगों ने मानवीय सहायता, मी-टू (MeToo) अभियान आदि पोस्ट करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया।
* इसने विभिन्न भौगोलिक सीमाओं को हटाकर लोगों को एक साथ लाया और विविध समुदायों के बीच सामंजस्यपूर्ण रूप से विकसित संबंध बनाए। उदाहरण: फेसबुक के माध्यम से, लोग विभिन्न देशों, क्षेत्रों, समुदायों में ऑनलाइन मित्र बना सकते हैं; दोस्त और परिवार अब व्हाट्सएप, गूगल डुओ और इसी तरह के अन्य ऐप आदि से जुड़े हुए हैं।
* सोशल मीडिया भी सरकार और लोगों की वार्ता के लिए एक नए मंच के रूप में उभर रहा है, जो जागरूकता पैदा करने, शिकायत निवारण आदि में मदद करता है। उदाहरण: लोगों ने रेल मंत्री आदि के समक्ष अपनी शिकायतें उठाने के लिए ट्विटर का इस्तेमाल किया।
* इसने आपदा के समय सूचना को शीघ्रता से प्रसारित करने के साथ-साथ कई बचाव प्रयासों में सहायता की है।

**सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव:**

* अपनी विशाल पहुंच के कारण, यह भारत में अभद्र भाषा और अफवाहें फैला रहा है, जो कई मामलों में हिंसा और मौतों के लिए जिम्मेदार हैं। उदाहरण: महाराष्ट्र के पालघर में गडचिंचले गांव की मॉब लिंचिंग की घटना आदि।
* यह एडिटेड इमेजेज, हेरफेर किए गए वीडियो और नकली टेक्स्ट संदेशों के रूप में लोगों के बीच नकली समाचार भी फैला सकता है, और गलत सूचना और विश्वसनीय तथ्यों के बीच अंतर करना कठिन हो जाता है। माइक्रोसॉफ्ट (2019) के एक अध्ययन के अनुसार, यह पाया गया कि 64% से अधिक भारतीय ऑनलाइन नकली समाचारों का सामना करते हैं, जो सर्वेक्षण किए गए 22 देशों में सर्वाधिक रिपोर्ट किया गया था।
* विभिन्न सोशल मीडिया पोर्टल्स पर ऑनलाइन ट्रोलिंग की कई घटनाएं भी हो रही हैं। लोग अपने विचारों से असहमत होने वालों को ट्रोल करना शुरू कर देते हैं।
* पोर्नोग्राफी, साइबर बलात्कार, बदमाशी, धमकियां आदि जैसे विभिन्न साइबर अपराधों की संख्या बढ़ रही है, जो बच्चों, वृद्ध लोगों, महिलाओं आदि जैसे कमजोर समूहों को प्रभावित करते हैं, और उनकी गरिमा और मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से चोट पहुँचाते हैं। पीड़ित, अवसाद का शिकार हो जाते हैं और अधिक कट्टरपंथी मामलों में, उन्हें अपनी जान गंवानी पड़ती है।
* सोशल मीडिया भी राजनीतिक क्षेत्र में एक बड़ी भूमिका निभा रहा है। विभिन्न राजनीतिक दल वोट बैंक को प्रभावित करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हैं, जिससे चुनाव परिणाम बदल सकता है।
* सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग के कारण इन दिनों गोपनीयता एक उभरती हुई चिंता है। डेटा का लीक होना, निजता का उल्लंघन आदि चिंता के कारण हैं जो लोगों के जीवन को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं।
* ये प्लेटफ़ॉर्म व्यसनी हैं, और इससे कार्यस्थलों पर उत्पादकता में भारी कमी आई है। यह कंपनियों पर नकारात्मक प्रभाव डालता है क्योंकि इससे उन्हें घाटा होता है। हाल ही में WHO ने इसे एक प्रकार के विकार के रूप में वर्गीकृत किया है।
* यह लोगों को अलग-थलग करता है; इसने कुछ लोगों का, विशेष रूप से अंतर्मुखी लोगों का, वास्तविक दुनिया के बजाय आभासी दुनिया पर बहुत अधिक भरोसा स्थापित किया है।

सोशल मीडिया एक शक्तिशाली क्रांति है जिसने हमारे जीवन को बदल दिया है; हम कैसे सामाजीकरण करते हैं, अपने व्यवसायों का संचालन करते हैं, राजनीतिक मामलों में संलग्न होते हैं, व्यवसायों का निर्माण करते हैं, और नौकरी की भर्ती करते हैं आदि मामलों में इसने बदलाव किया है। लेकिन इसका अनियंत्रित और अप्रयुक्त उपयोग गंभीर समस्याएं पैदा कर सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सरकारी नियमों, कानूनी उपायों और जागरूकता पैदा करने की सहायता से हम अपने जीवन को आसान बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कर सकते हैं, न कि विनाश के लिए।

12. 'भारत में, सफाई कर्मचारियों की चुनौतियाँ केवल व्यावसायिक नहीं हैं; सदियों से उनका शोषण किया जाता रहा है और उन्हें हाथ से मैला ढोने के लिए मजबूर किया जाता रहा है।' सफाई कर्मचारियों की स्थिति के उत्थान के लिए सरकार द्वारा उठाए गए विभिन्न उपायों पर चर्चा कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

**उत्तर:**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **भूमिका में, सफाई कर्मचारियों और उनके शोषण के बारे में संक्षेप में लिखने का प्रयास कीजिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **आप भारत में सफाई कर्मचारियों के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों पर चर्चा कर सकते हैं।**
* **आप सरकार द्वारा सफाई कर्मचारियों की स्थिति के उत्थान के लिए किए गए विभिन्न उपायों को भी लिख सकते हैं।**
* **निष्कर्ष में, सफाई कर्मचारियों की स्थिति में सुधार के उपाय सुझाने का प्रयास कीजिए।**

भारत में सामाजिक संरचना जाति व्यवस्था पर आधारित है; प्राचीन काल से, निम्न जाति के लोगों को परिचारक की नौकरी सौंपी जाती थीं, और उन्हें समाज में समान दर्जा नहीं दिया जाता था। आजादी के बाद, सरकार द्वारा उठाए गए कई कदमों के बावजूद, सफाई कर्मचारियों को अपने काम की प्रकृति और जाति-आधारित भेदभाव के कारण कई स्वास्थ्य और सुरक्षा जोखिमों, वित्तीय चुनौतियों और कलंक का सामना करना पड़ता है। भारत में लगभग 50 लाख लोग किसी न किसी प्रकार के स्वच्छता कार्य में कार्यरत हैं, और उनमें से लगभग 20 लाख लोग 'उच्च जोखिम' की स्थिति में काम कर रहे हैं।

**भारत में स्वच्छता कर्मियों के समक्ष चुनौतियां:**

* भारत में सफाई कर्मियों के पास सफाई के दौरान सुरक्षात्मक उपकरण, सुरक्षा संबंधी साजोसामान नहीं होते हैं, जिससे वे कई खतरनाक स्थितियों के संपर्क में आते हैं और परिणामस्वरूप बार-बार मृत्यु होती है।
* उनमें से लगभग 92.5% के पास सफाई कार्य करने के लिए आवश्यक उपकरण नहीं हैं, और लगभग 89.9% श्रमिकों को काम के लिए वर्दी नहीं मिलती है। एक सर्वेक्षण के अनुसार, लगभग 90% श्रमिकों ने कहा कि महामारी के दौरान उनके पास किसी भी प्रकार का स्वास्थ्य बीमा या स्वास्थ्य सुविधा नहीं है।
* पिछले पचास वर्षों में भारत में लगभग दस लाख सफाई कर्मचारियों की बेशुमार मौत का अनुमान है।
* कोविड19 महामारी के चरम के दौरान कई लोगों की मृत्यु हो गई, जिन्होंने अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में और गंगा के तट पर शवों के निपटान का कार्य किया।
* दस हजार से अधिक लोग हाथ से मैला ढोने और अस्वच्छ शौचालयों की सफाई से उत्पन्न होने वाली कई पुरानी स्थितियों का सामना करते हैं।
* विभिन्न स्वतंत्र सर्वेक्षणों के अनुसार, मौतों की लगातार खबरों के बावजूद, प्रौद्योगिकी और श्रमिकों के पुनर्वास में निवेश करने के लिए सरकारों की ओर से अनिच्छा ही जताई जा रही है; मैला उठाने का कार्य हाथ से जारी रखवाने वाले लोगों को दोषी ठहराए जाने की कोई रिपोर्ट नहीं मिली है।
* उनके पुनर्वास के लिए काम कर रहे लोगों/एजेंसियों को राज्य के समर्थन का भी अभाव है।
* सफाई कर्मियों की स्थिति पर शोध और सर्वेक्षण का अभाव है।
* स्वच्छता कार्यों में लिप्त लोगों के साथ एक सामाजिक कलंक जुड़ा हुआ है; उनके परिवारों को अपने दैनिक जीवन में भेदभाव का सामना करना पड़ता है।
* इन कामगारों को कोई संस्थागत प्रशिक्षण, स्वास्थ्य सहायता या निर्देश नहीं मिलता है, जो उन्हें काम के दौरान एहतियाती उपायों से अनजान बनाता है।
* उन्हें भुगतान में देरी, कम वेतन आदि जैसे मुद्दों का भी सामना करना पड़ता है, जो उन्हें आर्थिक रूप से कमजोर बनाता है।
* अधिकांश सफाई कर्मचारी, सरकारी और निजी दोनों ठेकेदारों द्वारा अनुबंध के आधार पर काम पर रखे जाते हैं। इस प्रकार, उनके पास सामाजिक और रोजगार की सुरक्षा नहीं है, और वे बिना किसी सुरक्षा उपायों के कठोर वातावरण में काम करते हैं।

**स्वच्छता श्रमिकों के लिए सरकार द्वारा किए गए उपाय:**

* संविधान का अनुच्छेद 14, 17 और 21 मौलिक अधिकारों को सुनिश्चित करता है, समान दर्जा प्रदान करता है और इन श्रमिकों की गरिमा की रक्षा करता है।
* नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम (1955) ने छुआछूत पर आधारित एक व्यवसाय के रूप में मैला ढोने या झाडू लगाने के उन्मूलन की बात की।
* 1980 के आसपास, मैला ढोने वालों के कल्याण के लिए कम लागत वाली स्वच्छता की केंद्र प्रायोजित हाथ से सफाई करने वाले (मैनुअल स्कैवेंजिंग) के उन्मूलन के लिए कम लागत वाली एकीकृत स्वच्छता योजना (ILCS) के माध्यम से शुष्क शौचालयों को गड्ढे वाले शौचालयों में बदलने की मांग की।
* सरकार ने 1993 में अस्वच्छ शुष्क शौचालयों के निर्माण और हाथ से मैला ढोने वालों को नियोजित करने पर रोक लगाने के लिए एक अधिनियम पारित किया है। इसने बेहतर पहचान के लिए 'हाथ से सफाई करने वाले अर्थात मैनुअल स्कैवेंजिंग' और शुष्क शौचालय को परिभाषित किया।
* स्केवेंजर्स के कल्याण और पुनर्वास की राष्ट्रीय योजना (NYSLRS, 1992) और SRMS, 2001 कौशल विकास प्रक्रियाओं और रोजगार प्रदान करने पर जोर देती है।
* मैनुअल स्कैवेंजर्स के रूप में रोजगार का निषेध और उनका पुनर्वास अधिनियम, 2013: यह हाथ से मैला ढोने के कार्य, बिना सुरक्षात्मक उपकरणों के सीवर और सेप्टिक टैंक की मैन्युअल सफाई और अस्वच्छ शौचालयों के निर्माण पर रोक लगाता है।
* यह हाथ से मैला ढोने वालों का पुनर्वास करने और उन्हें वैकल्पिक रोजगार प्रदान करने का भी प्रयास करता है।
* विधेयक के तहत अपराध संज्ञेय और गैर-जमानती होंगे और उन पर फौरन अभियोग दायर किया जा सकता है।
* **अत्याचार निवारण अधिनियम, 1989:** यह अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के सदस्यों के खिलाफ अत्याचार के अपराधों को रोकता है और ऐसे अपराधों के परीक्षण के लिए विशेष न्यायालयों और अनन्य विशेष न्यायालयों का प्रावधान करता है।
* यह ऐसे अपराधों के पीड़ितों को राहत और पुनर्वास का भी प्रावधान करता है।
* **राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग** (**NSKM**): यह एक वैधानिक निकाय है जो भारत में सफाई कर्मचारियों (कचरा संग्रहकर्ता) की स्थितियों की जांच करता है और सरकार को सिफारिशें करता है।
* राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी विकास और वित्त निगम (NSKFDC) और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति विकास निगम (SDC) और राज्य स्तर पर महा दलित विकास मिशन जैसे आयोग स्वच्छता कार्यकर्ताओं के विकास के लिए गठित किए गए हैं और उन्हें वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।
* **मैनुअल स्कैवेंजर्स के रूप में रोजगार का निषेध और उनका पुनर्वास (संशोधन) विधेयक, 2020:** यह सीवर सफाई के पूर्ण मशीनीकरण के माध्यम से भारत में हाथ से मैला ढोने के उन्मूलन पर जोर देने वाली कार्य योजना पर आधारित है।
* इसमें न केवल सुरक्षा उपकरणों के प्रावधान के संदर्भ में हाथ से मैला उठाने वालों की सुरक्षा के लिए कड़े उपाय शामिल हैं, बल्कि सीवर से होने वाली मौतों के मामलों में मुआवजे के नियमों को सख्ती से लागू करना भी शामिल है।

सरकार, भारत में हाथ से मैला ढोने वालों की कार्य दशाओं को विनियमित करने के लिए विभिन्न आयोगों की सिफारिशों पर विचार कर सकती है जैसे काका कालेलकर आयोग (1956), जो शौचालयों की सफाई के लिए मशीनीकरण की आवश्यकता को रेखांकित करता है, बर्वे आयोग, मलकानी समिति (1957) और पांड्या समिति (1968)। देश के त्वरित और अधिक समावेशी वृद्धि और विकास को सुनिश्चित करने के लिए मृत्यु और कानूनी निवारण और परामर्श, दोनों मामलों में आसान कानूनी मदद के लिए एक उचित तंत्र होना चाहिए।

13. 'जब तक भारत में राज्यों को रोजगार पैदा करने की स्वायत्तता नहीं मिलती है, वे केवल स्थानीय लोगों के लिए मौजूदा नौकरियों को आरक्षित करने का सहारा लेते रहेंगे।' इस संदर्भ में, बढ़ते क्षेत्रवाद के विभिन्न कारकों पर चर्चा कीजिए। साथ ही, इस समस्या के समाधान के उपाय भी सुझाइए। (15 अंक, 250 शब्द)

**उत्तर:**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **भूमिका में, क्षेत्रवाद की अवधारणा के बारे में संक्षेप में लिखने का प्रयास कीजिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **आप भारत में बढ़ते क्षेत्रवाद के विभिन्न कारकों पर चर्चा कर सकते हैं।**
* **आप समस्या के समाधान के लिए कुछ उपाय भी सुझा सकते हैं।**
* **निष्कर्ष में, आगे की राह सुझाने का प्रयास कीजिए।**

क्षेत्रवाद एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र के भीतर लोगों के बीच पहचान और अपनेपन की भावना है, जो अपनी अनूठी भाषा, बोली, संस्कृति आदि से एकजुट है। यह लोगों को भाईचारे और एकता की भावना विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है और एक विशेष क्षेत्र के हितों की रक्षा करता है, और कल्याण *एवं* विकास को बढ़ावा देता है। लेकिन एक नकारात्मक अर्थ में, इसका अर्थ कभी-कभी अपने क्षेत्र से अत्यधिक लगाव होता है, जो देश की एकता और अखंडता के लिए एक बड़ा खतरा बन सकता है।

**भारत में बढ़ते क्षेत्रवाद के कारक:**

* सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (CMIE) द्वारा संकलित आंकड़ों के अनुसार, भारत में बेरोजगारी दर बढ़कर 7.2 प्रतिशत (2019) हो गई, जो अब तक की उच्च दर पर पहुंच गई है। इस प्रकार, कई राज्य सरकारों जैसे हरियाणा आदि ने स्थानीय लोगों के लिए रोजगार आरक्षित किया है।
* चूंकि नई नौकरियों का सृजन पूरी तरह से राज्य सरकारों के नियंत्रण में नहीं है, लेकिन यह कई कारकों की एक परस्पर जटिल क्रिया है। यह बड़ी अर्थव्यवस्था के प्रदर्शन का परिणाम है।
* वस्तु और सेवा कर (जीएसटी) की शुरूआत के बाद, भारत में राज्य सरकारों ने अपनी वित्तीय स्वायत्तता खो दी है और व्यवसायों को कर रियायत प्रदान करने की कोई शक्ति नहीं है।
* नए व्यवसायों को प्रोत्साहित करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले स्थानीय बुनियादी ढांचे, कुशल स्थानीय श्रम आदि की उपलब्धता, राज्य की कई दशकों की सामाजिक प्रगति का एक कार्य है और इसे तुरंत वापस नहीं लिया जा सकता है।
* व्यापार और बहुराष्ट्रीय कंपनियों को आकर्षित करने के लिए राज्यों के बीच असमान प्रतिस्पर्धा है।
* आपूर्तिकर्ताओं, स्कूलों आदि के एक सुस्थापित नेटवर्क वाला राज्य, पीछे छूटे हुए राज्यों की तुलना में और भी अधिक व्यवसायों को आकर्षित करने के लिए अधिक लाभ की स्थिति में होता है।
* जिन राज्यों में पहले से ही एक बड़ी कंपनी स्थापित है, वे सामूहिक प्रभाव पैदा करते हैं, जो क्षेत्र में व्यापार को आसान बनाता है और अन्य कंपनियों को आकर्षित करता है।
* यह पिछड़े राज्यों की कीमत पर अधिक समृद्ध राज्यों के चक्र को और भी तेजी से बढ़ने की ओर ले जाता है।
* भारतीय राज्यों में एक '3-3-3' प्रभाव है, जो यह है कि 1970 में 1.4 गुना की तुलना में, प्रति व्यक्ति आय में, तीन सर्वाधिक अमीर राज्य (महाराष्ट्र, तमिलनाडु और कर्नाटक) तीन सर्वाधिक गरीब राज्यों (बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश) की तुलना में तीन गुना अधिक अमीर हैं।
* भारत में अमीर और गरीब राज्यों के बीच यह अंतर केवल तेजी से बढ़ रहा है और आधुनिक आर्थिक विकास प्रतिमानों के समूह प्रभाव के कारण कम नहीं हो रहा है।



**भारत में क्षेत्रवाद की समस्या के समाधान के उपाय:**

* 'विविधता में एकता' को भारतीय राष्ट्र-राज्य के बहुलवादी चरित्र के लिए विविध आबादी की बहु आकांक्षाओं के आवास द्वारा संरक्षित करने की आवश्यकता है।
* सरकार को बॉटम-अप दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए आर्थिक नीति-निर्माण प्रक्रिया में भारत की राज्य सरकारों की भागीदारी को बढ़ावा देकर सहकारी संघवाद को बढ़ाना चाहिए।
* सरकार को केंद्र प्रायोजित विभिन्न योजनाओं के साथ-साथ समावेशी विकास के लिए पिछड़े राज्यों में विकास के लिए निजी हितधारको को प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए।
* पिछड़े क्षेत्र के लोगों के उत्थान के लिए नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन की भी आवश्यकता है।
* विकासशील राज्यों को शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता पर राज्यों द्वारा सामाजिक व्यय के स्तर को बढ़ाने के लिए अधिक स्वायत्तता और वित्त प्रदान किया जाना चाहिए जो मानव संसाधन विकास के मूल हैं।
* देश में एकता विकसित करने के लिए राष्ट्रीय एकता परिषद, नीति आयोग आदि संस्थाओं का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाना चाहिए।

अंतर-राज्यीय असमानता को बढ़ाने का शक्तिशाली संयोजन, आर्थिक विकास मॉडल, एक 'समृद्ध राज्य समृद्ध हो जाते हैं' एक आसन्न जनसांख्यिकीय आपदा, और राजनीतिक एवं सांस्कृतिक रूप से विविध लोकतंत्र में निर्वाचित राज्य सरकारों के लिए वित्तीय स्वायत्तता में कमी, भारत के विभिन्न राज्यों के मध्य अनिवार्य रूप से देशी उप-राष्ट्रवाद, जनजातिवाद का प्रचार करेगी। विभिन्न राज्यों के लिए आर्थिक क्षेत्र में समान अवसर हैं, और राज्यों को प्रदान की जाने वाली अधिकाधिक वित्तीय स्वतंत्रता विभिन्न राज्यों के बीच एकता, समावेशी विकास सुनिश्चित कर सकती है और नए भारत के निर्माण में योगदान कर सकती है।

14. 'देश के कई हिस्सों में धार्मिक हिंसा और इसके प्रोत्साहन की सूची, स्वतंत्रता पूर्व और बाद के भारत दोनों में एक बेचैनी उत्पन्न करने वाली वास्तविकता बनी हुई है।' इस संदर्भ में, सांप्रदायिकता के विभिन्न कारणों पर चर्चा कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

**उत्तर:**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **भूमिका में, सांप्रदायिकता को संक्षेप में परिभाषित करने का प्रयास कीजिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **आप स्वतंत्र भारत से पहले और बाद में धार्मिक हिंसा की विभिन्न घटनाओं पर चर्चा कर सकते हैं।**
* **आप भारत में साम्प्रदायिकता के विभिन्न कारणों को भी लिख सकते हैं।**
* **निष्कर्ष में आप कुछ उपाय सुझा सकते हैं और उन्हें विभिन्न सरकारी प्रयासों से जोड़ सकते हैं।**

**'सांप्रदायिकता' शब्द धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक रूढ़िवाद को दर्शाता है।** यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो अपने समूह को एकमात्र वैध या योग्य समूह के रूप में देखता है, अन्य समूहों को निम्न, नाजायज और विरोधी के रूप में देखता है। यह धर्म से जुड़ी एक आक्रामक राजनीतिक विचारधारा है जो एक समुदाय को दूसरे समुदाय के शत्रुतापूर्ण विरोध में एक धार्मिक पहचान के इर्द-गिर्द एकजुट करने का प्रयास करती है।



**आजादी से पहले और बाद के भारत में धार्मिक हिंसा:**

* भारत विविधता का देश है जहां कई धर्म और संप्रदाय एक साथ रहते हैं, जो अक्सर लोगों के बीच संघर्ष का कारण बनते हैं।
* **प्राचीन भारत:** यह अधिकांशत: एकजुट था, और सांप्रदायिकता की कोई भावना नहीं थी; लोग एक-दूसरे की संस्कृति और परंपरा के प्रति स्वीकृति और सहिष्णुता के साथ शांतिपूर्वक साथ रहते थे। उदाहरण: अशोक की धम्म नीति। हालाँकि, हमने कई बार हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म के बीच टकराव देखा।
* **मध्यकालीन भारत:** भारत में इस्लाम के आगमन के साथ, धार्मिक रूपांतरण, बुनियादी ढांचे और नीतियों के विध्वंस आदि के रूप में लोगों के बीच सांप्रदायिक तनाव बढ़ गया। उदाहरण के लिए, औरंगजेब ने अन्य समुदायों की धार्मिक प्रथाओं पर कर लगाया, मंदिरों को नष्ट किया, जबरन धर्मांतरण, सिख गुरुओं की हत्या, आदि की, जिसने भारत में सांप्रदायिक भावनाओं को गहरा किया।
* लेकिन सहिष्णुता के विभिन्न उदाहरण भी थे, जैसे अकबर, जो धर्मनिरपेक्ष प्रथाओं का प्रतीक था, जजिया कर को समाप्त करने और दीन-ए-इलाही एवं इबादत खाना की शुरुआत के माध्यम से इसके प्रचार में विश्वास करता था।
* **औपनिवेशिक काल:** उन्नीसवीं शताब्दी के अंत के आसपास, राष्ट्रवाद के उदय के साथ, सांप्रदायिकता ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और भारतीय लोगों की एकता और राष्ट्रीय आंदोलन के लिए सबसे बड़ा खतरा पैदा कर दिया।
* उदाहरण: हिंदू पुनरुत्थानवादी आंदोलन जैसे आर्य समाज का शुद्धि आंदोलन, गाय संरक्षण के मुद्दे पर दंगे (1892), फ़राज़ी आंदोलन, अखिल भारतीय मुस्लिम लीग और अखिल भारतीय हिंदू महासभा का गठन, वहाबी आंदोलन, तंजीम और तबलीग आंदोलन (मुसलमानों के बीच), आदि।
* ब्रिटिश सरकार ने भी अपनी प्रशासनिक नीतियों जैसे बंगाल विभाजन, मॉर्ले-मिंटो सुधार (1909), कम्युनल अवार्ड (1932) आदि के माध्यम से सांप्रदायिक विभाजन को गति दी।
* निरंतर भय, हिंसा और घृणा के साथ, एक अलग राष्ट्र की मांग बढ़ रही थी, जिसके कारण अंततः भारत का विभाजन हुआ।
* **स्वतंत्रता के बाद का भारत:** स्वतंत्रता और राष्ट्र विभाजन के बाद भी, सांप्रदायिकता कायम रही है और हमारे देश के धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने के लिए सबसे बड़ा खतरा रही है।
* सांप्रदायिक हिंसा की कई घटनाएं हुई हैं जैसे विभाजन हिंसा, 1969 में अहमदाबाद दंगे, सिख विरोधी दंगे, 1984, ऑपरेशन ब्लू स्टार, कश्मीरी हिंदू पंडितों का मुद्दा (1989), 1989 में भागलपुर दंगा, अयोध्या में बाबरी मस्जिद विध्वंस, 1992, गोधरा दंगे 2002 आदि।
* वर्तमान समय में, भारत की वृद्धि और विकास के बावजूद, बहुत बार सांप्रदायिक तनाव उत्पन्न होता है। उदाहरण के लिए, हादिया केस 2017, घर वापसी कार्यक्रम, दिल्ली दंगा 2020 या पूर्वोत्तर दिल्ली दंगे, गौरक्षकता, मुजफ्फरनगर दंगे (2013) आदि।

**भारत में सांप्रदायिकता के कारण:**

* **ऐतिहासिक कारक:** मध्यकालीन भारत के इतिहास का गलत प्रक्षेपण और औपनिवेशिक सरकार की नीतियों, सांप्रदायिक भावनाओं की गहरी जड़ों और साथ ही, पुनरुत्थानवादी आंदोलनों ने लोगों के बीच सांप्रदायिक भावनाओं को मजबूत किया है।
* **राजनीतिक कारक:** हिंदू और मुस्लिम दोनों के प्रभाव, अपने समुदायों के हित के लिए सांप्रदायिक नेताओं ने सांप्रदायिकता के विकास और प्रसार में एक मजबूत भूमिका निभाई है।
* अवसरवाद की राजनीति और वोट बैंक की राजनीति भारत में सांप्रदायिकता का सबसे बड़ा कारण है।
* भारत में सांप्रदायिक और कट्टरपंथी पार्टियों का उदय हुआ है जो लोगों को अन्य समुदायों के खिलाफ अपने हितों को हासिल करने के लिए लामबंद करती हैं।
* **आर्थिक कारक:** भारत में विभिन्न समुदायों के बीच एक बड़ा अंतर है, जो शोषित और अलगाव की भावना पैदा करता है और सांप्रदायिकता की भावना को कई गुना बढ़ाता है।
* अर्थव्यवस्था का विस्तार न होना, श्रमिकों के किए काम की कमी, प्रतिस्पर्धी बाजार आदि इसमें योगदान करने वाले कारक हैं।
* शैक्षिक पिछड़ापन, सरकारी नौकरियों में कम प्रतिनिधित्व, पर्याप्त आर्थिक अवसरों की कमी, सामाजिक-आर्थिक संकेतकों में असमानता आदि अल्पसंख्यक या किसी विशेष समुदाय के अलगाव की समस्या पैदा करता है, सांप्रदायिक तनाव बढ़ाता है।
* **सामाजिक कारक:** भारत में विभिन्न समुदायों की धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाओं में अंतर है।
* समुदायों के रीति-रिवाज, सामाजिक संस्थाएं और प्रथाएं इतनी भिन्न हैं, जो भारत में सांप्रदायिकता को और बढ़ावा देती हैं। उदाहरण के लिए, गोमांस का सेवन, हिंदी और उर्दू भाषा, धार्मिक समूहों द्वारा धर्मांतरण के प्रयास आदि।
* समुदायों के बीच पारस्परिक विश्वास और आपसी समझ की कमी भी विद्यमान है, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर एक समुदाय में दूसरे समुदाय के सदस्यों के खिलाफ खतरे, भय, उत्पीड़न और खतरे की धारणा उत्पन्न होती है, और लड़ाई, घृणा और क्रोध जैसी बुराइयों को उत्पन्न करता है।
* **मीडिया की भूमिका:** मीडिया अक्सर अफवाहों को सनसनीखेज और समाचार के रूप में प्रसारित करता है जिसके परिणामस्वरूप कभी-कभी दो प्रतिद्वंद्वी धार्मिक समूहों के बीच तनाव बढ़ता है और दंगे होते हैं।
* सोशल मीडिया के विकास के साथ, जिसकी व्यापक पहुंच है और काफी हद तक अनियंत्रित है, नकली समाचार, प्रचार आदि का प्रसार आग की गति से फैल रहा है। उदाहरण के लिए, व्हाट्सएप, ट्विटर, फेसबुक आदि का उपयोग फर्जी खबरें फैलाने के लिए किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप देश के कई हिस्सों में मॉब लिंचिंग, सांप्रदायिक दंगे आदि हुए।

भारत जैसे धर्मनिरपेक्ष और विविधतापूर्ण देशों में, देश की प्रगति और विकास में सांप्रदायिकता एक बड़ी बाधा है। सरकार को आपराधिक न्याय प्रणाली में सुधार करना चाहिए, प्रशासन के सभी वर्गों में अल्पसंख्यक समुदायों और कमजोर वर्गों का प्रतिनिधित्व बढ़ाना चाहिए, मूल्य-उन्मुख शिक्षा पर जोर देना चाहिए, सांप्रदायिक जागरूकता के लिए नागरिक समाज और गैर सरकारी संगठनों को प्रोत्साहित करना चाहिए और सांप्रदायिकता के मुद्दे को प्रभावी ढंग से संबोधित करना चाहिए। सरकार ने समृद्ध विविधता की रक्षा और भारत में सांप्रदायिक सद्भाव बनाने के लिए एक भारत श्रेष्ठ भारत अभियान शुरू किया है।

15. भारत में प्रवास के लिए उत्तरदायी विभिन्न कारकों की विवेचना कीजिए तथा उनके प्रभावों का उल्लेख कीजिए। क्या आपको लगता है कि प्रवासियों की तात्कालिक संकट की स्थिति को दूर करने के अलावा, राज्य को दीर्घकालिक समाधान के बारे में सोचने की जरूरत है? (15 अंक, 250 शब्द)

**उत्तर:**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **भूमिका में, भारत में प्रवास की स्थिति के बारे में संक्षेप में लिखने का प्रयास कीजिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **आप भारत में प्रवास के लिए जिम्मेदार विभिन्न कारकों पर चर्चा कर सकते हैं और उनके प्रभावों का उल्लेख कर सकते हैं।**
* **आप प्रवास की समस्या के लिए दीर्घकालिक और अल्पकालिक समाधान दोनों की आवश्यकता के बारे में भी लिख सकते हैं।**
* **निष्कर्ष में, आगे की राह सुझाने का प्रयास कीजिए।**

2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में आंतरिक प्रवासियों की संख्या लगभग 450 मिलियन थी, जो 2001 में दर्ज 309 मिलियन से 45% की वृद्धि है। आंतरिक प्रवासियों की संख्या 2001 में 30% से बढ़कर 2011 में 37% हो गई है। भारत के आर्थिक सर्वेक्षण (2017) के अनुसार, भारत में अंतर-राज्यीय प्रवास का अनुमानित परिमाण 2011 और 2016 के बीच सालाना 9 मिलियन के करीब था।

**प्रवास के लिए जिम्मेदार कारक:**



**प्रवास के परिणाम:**

* **आर्थिक परिणाम:** आंतरिक प्रवासियों द्वारा भेजे गए प्रेषण की राशि स्रोत क्षेत्र की अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
* महानगरीय शहरों में अनियंत्रित प्रवास के कारण महाराष्ट्र, गुजरात आदि जैसे औद्योगिक रूप से विकसित राज्यों में भीड़भाड़ और मलिन बस्तियों का विकास हुआ है।
* **जनसांख्यिकीय परिणाम:** यह एक देश के भीतर जनसंख्या के पुनर्वितरण की ओर जाता है और शहरों की जनसंख्या वृद्धि में योगदान देता है।
* उत्तराखंड, राजस्थान आदि राज्यों में उच्च प्रवास ने आयु और लिंग संरचना में गंभीर असंतुलन ला दिया है।
* **सामाजिक परिणाम:** प्रवासी सामाजिक परिवर्तन के एजेंट के रूप में कार्य करते हैं, प्रौद्योगिकियों से संबंधित नए विचार, परिवार नियोजन, आदि, उनके माध्यम से शहरी से ग्रामीण क्षेत्रों में फैल जाते हैं।
* यह विविध संस्कृतियों के लोगों को आपस में मिश्रित करने की ओर ले जाता है और मिश्रित संस्कृति के विकास जैसे सकारात्मक योगदान देता है।
* इसके गंभीर नकारात्मक परिणाम भी हैं जैसे गुमनामी और निराशा की भावना, जो लोगों को अपराध और नशीली दवाओं के दुरुपयोग जैसी असामाजिक गतिविधियों के जाल में पड़ने के लिए प्रेरित कर सकती है।
* **पर्यावरणीय परिणाम:** लोगों की भीड़भाड़ ने मौजूदा सामाजिक और भौतिक बुनियादी ढांचे पर दबाव डाला है, जो अंततः शहरी बस्तियों के अनियोजित विकास की ओर ले जाता है।
* कुछ अन्य मुद्दे भी हैं जैसे प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, वायु प्रदूषण, सीवेज का निपटान और ठोस कचरे का प्रबंधन आदि।

**प्रवास के लिए दीर्घकालिक और अल्पकालिक समाधान की आवश्यकता:**

* मौसमी प्रवास हमारे समय के सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक है; विमुद्रीकरण, प्रवासियों के खिलाफ हिंसा, कोविड-19 के दौरान लगाए गए लॉकडाउन आदि के कारण बड़े पैमाने पर पलायन के नए आख्यान हैं।
* प्रवासियों की वापसी से आर्थिक आघात लगता है क्योंकि आजीविका के कोई प्रतिपूरक स्रोत नहीं हैं। गरीब राज्यों को प्रेषण के बिना खुद को बनाए रखना मुश्किल हो सकता है।
* यह न केवल मांग-पक्ष के आघातों का कारण बनेगा, बल्कि पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा और वृद्ध आबादी के कल्याण को भी प्रभावित करेगा।
* भारत की अर्थव्यवस्था, विशेष रूप से विकास केंद्रों की, प्रवासी श्रमिकों की सेवाओं पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, निर्माण, परिधान निर्माण, खनन आदि।
* प्रवास, बीमारी के फैलने की आशंका भी पैदा करता है; दैनिक वेतन भोगी कर्मचारी बिना काम के गंतव्य पर नहीं रह सकते।
* प्रवासियों के काम करने और रहने की स्थिति सभ्य काम और सामान्य सुरक्षा के विचार को धता बताती है। मलिन बस्तियों और झुग्गी बस्तियों जैसी कॉलोनियां स्वच्छता, सामाजिक सुरक्षा आदि की कमी के कारण संचारी रोगों के लिए प्रजनन स्थल हैं।

विभिन्न सरकारी कदमों के बावजूद, प्रवास अभी भी नीति निर्माताओं के लिए चिंता का एक बड़ा कारण है। आपदा ने संरचनात्मक त्रुटियों को सुधारने का अवसर प्रदान किया है। राज्य तत्काल संकट की स्थिति का सामना करने और साथ ही साथ प्रवासियों और अनौपचारिक क्षेत्र की नीति में संरचनात्मक परिवर्तन लाने के लिए दीर्घकालिक उपाय शुरू करने की रणनीति तैयार कर सकता है।

16. वे कौन-सी सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ थीं जिनके कारण अक्टूबर क्रांति हुई? साथ ही इसके दुष्परिणामों का भी उल्लेख कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

उत्तर:

प्रश्न को डिकोड करना:

* भूमिका में, अक्टूबर क्रांति के बारे में संक्षेप में लिखने का प्रयास कीजिए।
* मुख्य भाग में,
* आप क्रांति को जन्म देने वाली विभिन्न सामाजिक और आर्थिक कारकों के बारे में लिख सकते हैं।
* आप क्रांति के परिणाम का भी उल्लेख कर सकते हैं।
* निष्कर्ष में, अक्टूबर क्रांति के कारकों और प्रभाव को संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास कीजिए।

अक्टूबर **क्रांति, जिसे बोल्शेविक क्रांति के रूप में भी जाना जाता है, 1917 की रूसी क्रांति का दूसरा और अंतिम प्रमुख हिस्सा था। इसका नेतृत्व बोल्शेविकों ने किया था, जिन्होंने ज़ार निकोलस II के शासन को उखाड़ फेंकने के बाद सरकारी भवनों और अस्थायी सरकार की सत्ता पर कब्जा कर लिया था। क्रांति के अंत में, लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविकों ने रूस में सोवियत शासन का उद्घाटन किया।**

क्रांति को जन्म देने वाले सामाजिक और आर्थिक कारक:

* **रूसी क्रांतिकारी आंदोलन रूसी समाज में उभरी नई सामाजिक और आर्थिक ताकतों की लोकतांत्रिक आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है।**
* **उन्नीसवीं सदी में, लोगों में, विशेषकर किसानों में, जार के खिलाफ व्यापक असंतोष था।**
* **कृषि दास प्रथा के उन्मूलन के बाद भी किसानों की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। उनके पास बहुत छोटी जोत थी और उसे विकसित करने के लिए कोई पूंजी नहीं थी। उन्हें दशकों तक भारी मोचन देय राशि का भुगतान करने के लिए भी मजबूर किया गया था।**
* **उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, रूस ने बड़े पैमाने पर जनसंख्या वृद्धि का अनुभव किया और इससे कृषि पर अधिक दबाव आ गया।**
* **एक विशाल अकाल-प्रवण क्षेत्र में खराब प्रशासन और संगठन के कारण भुखमरी का खतरा बढ़ गया।**
* **यूरोप के अन्य देश सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन का अनुभव कर रहे थे, लेकिन रूस में, पुराने शासन को बिना किसी सुधार के जारी रखा गया था।**
* **निरंकुशता का संरक्षण सरकार का प्रमुख कर्तव्य माना जाता था। पादरियों की एकमात्र कुलीनता और ऊपरी वर्ग ने शासक का समर्थन किया।**
* **नौकरशाही का निर्माण सरकार द्वारा किया गया था, वह शीर्ष पर भारी, अनम्य और अक्षम थी; सदस्यों को योग्यता के बजाय विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों में से भर्ती किया जा रहा था।**
* **रूस के विशाल साम्राज्य में विविध राष्ट्रीयताएँ शामिल थीं, ऐसे में लोगों पर रूसी भाषा थोपने से असंतोष बढ़ गया।**
* **उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में, विदेशी निवेश की मदद से रूस में औद्योगीकरण बहुत देर से शुरू हुआ।**
* **श्रमिकों की स्थिति बहुत खराब थी; उनके पास कोई राजनीतिक अधिकार नहीं था और उन्हें बहुत कम वेतन मिलता था।**
* **सरकार ने श्रमिकों को कोई सुरक्षा प्रदान नहीं की थी और नियमों को लागू करने के लिए** अनिच्छुक थी।

क्रांति के परिणाम:

* **निजी संपत्ति की अवधारणा का बोल्शेविकों ने विरोध किया था। इस प्रकार, क्रांति के बाद अधिकांश उद्योगों और बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया; सरकार ने स्वामित्व और प्रबंधन अपने हाथ में ले लिया।**
* **भूमि को सामाजिक संपत्ति के रूप में घोषित किया गया था, और किसानों को कुलीनों की भूमि को जब्त करने की अनुमति दी गई थी।**
* **उन्होंने परिवारों के आधार पर बड़े घरों के विभाजन को भी लागू किया और पुरानी नोबेल उपाधियों के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया।**
* **सेना और प्रशासन का पुनर्गठन किया गया और मौजूदा व्यवस्था में सुधार के लिए चुनाव कराए गए। परिवर्तन पर जोर देने के लिए, सेना और अधिकारियों के लिए नई वर्दी तैयार की गई।**
* **रूस में एकदलीय शासन का उदय हुआ और ट्रेड यूनियनों को उनके अधीन रखा गया।**
* **बोल्शेविकों की आलोचना करने वालों को दंडित करने के लिए गुप्त पुलिस की स्थापना की गई (जिसे पहले चेका कहा जाता है, और बाद में ओजीपीयू और एनकेवीडी कहा जाने लगा था)।**
* **अक्टूबर क्रांति सरकार के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों के कारण शुरू हुई और इसने लोगों के समान अधिकार प्राप्त करने के लिए व्यवस्था में सुधार के लिए एक नई व्यवस्था की स्थापना की। लेकिन बाद में इसकी अपनी सीमाएँ और मुद्दे भी थे। हालाँकि, इस क्रांति ने निरंकुश शासन को उखाड़ फेंका और समाजवाद को लोकप्रिय बनाया जिसने दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अन्य देशों को भी प्रेरित किया।**

17. फासीवादी और नाजी आंदोलनों की मुख्य विशेषताओं की तुलना और इनमें भेद निरूपण कीजिए। चर्चा कीजिए कि कैसे नाज़ीवाद की जीत न केवल यूरोप के लिए बल्कि दुनिया के अन्य हिस्सों के लिए भी एक दुर्भाग्य था। (15 अंक, 250 शब्द)

उत्तर:

प्रश्न को डिकोड करना:

* भूमिका में, फासीवाद और नाज़ीवाद दोनों के बारे में संक्षेप में लिखने का प्रयास कीजिए।
* मुख्य भाग में,
* आप फासीवाद और नाज़ीवाद दोनों के बीच समानताएं और अंतर लिख सकते हैं।
* आप यह भी चर्चा कर सकते हैं कि कैसे नाज़ीवाद की जीत यूरोप और दुनिया दोनों के लिए एक आपदा थी।
* निष्कर्ष में, इसके परिणामों का उल्लेख करने का प्रयास कीजिए।

**फासीवाद एक ऐसी राजनीतिक विचारधारा है जिसकी विशेषता मजबूत राष्ट्रवाद, सत्तावाद का एक चरम स्तर, निगमवाद, सैन्यीकरण और उदारवाद और मार्क्सवाद दोनों के प्रति शत्रुता है, जिसे इटली में प्रथम विश्व युद्ध के बाद विकसित किया गया था। दूसरी ओर, नाज़ीवाद बीसवीं सदी की जर्मन नाज़ी पार्टी से जुड़ी विचारधारा और प्रथाओं का समूह है। यह गहन राष्ट्रवाद, सामूहिक अपील और तानाशाही शासन आदि पर आधारित था। दोनों में विभिन्न समानताएं और मतभेद थे।**

नाज़ीवाद और फासीवाद के बीच समानताएँ:

* **दोनों आंदोलन घोर साम्यवादी विरोधी थे और उन्हें अपने-अपने देशों के सभी वर्गों से समर्थन का एक ठोस आधार मिला।**
* **उन्हें एक अधिनायकवादी राज्य बनाने का प्रयास किया गया था और वे लोकतंत्र और पारंपरिक वाम और दक्षिणपंथी दलों के खिलाफ थे, वाक् की स्वतंत्रता का विरोध करते थे और साम्यवाद और पूंजीवाद, नारीवाद और समलैंगिकता के खिलाफ थे।**
* **दोनों नेताओं ने अपने देशों को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा दिया।**
* **दोनों आंदोलन चरम राष्ट्रवाद की भावना, नायक/जन नेता के पंथ पर आधारित थे और राज्य की सर्वोच्चता पर जोर देते थे।**
* **दोनों ने राज्य के नेतृत्व वाली अर्थव्यवस्था के एक हिस्से के रूप में सामूहिकवाद (भूमि का स्वामित्व और राज्य द्वारा उत्पादन के साधन) का अनुसरण किया।**
* **उनका उद्देश्य एक ऐसे नेता के नेतृत्व में एक तानाशाही की स्थापना करना था जिसके पास सारी शक्ति हो और जो हिंसा, साम्राज्यवाद और सैन्यवाद का महिमामंडन करता हो।**

**दोनों अधिनायकवादी विचारधाराएं हैं, जो सार्वजनिक और निजी जीवन के सभी पहलुओं को नियंत्रित करना चाहती हैं। और दोनों विचारधाराओं में से किसी ने भी वर्ग संघर्ष के बजाय वर्ग सहयोग के अपने विचार के परिणामस्वरूप वर्ग संघर्षों और हितों के टकराव में विश्वास नहीं किया।**

नाज़ीवाद और फासीवाद के बीच अंतर:

|  |  |
| --- | --- |
| फासीवाद | नाजीवाद |
| 'फासीवाद' शब्द 'फासियो' से बना है, जिसका अर्थ होता है लकड़ियों का गट्ठर। | नाज़ीवाद शब्द जर्मन भाषा से लिया गया है, जो नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी के नाम पर आधारित है |
| इटली में व्यवस्था बहाल करने के लिए बेनिटो मुसोलिनी और ओसवाल्ड मोस्ले द्वारा 1919 के आसपास इटली में फासीवाद की उत्पत्ति हुई। | यह एडॉल्फ हिटलर के नेतृत्व में उभरा, उनकी विचारधारा फासीवाद से प्रभावित थी। |
| यह एक 'मूल/शुद्ध राज्य' बनाने के लिए सभी तत्वों के निगमीकरण में विश्वास करता है। इसके लिए, राज्य उनकी मान्यताओं का एक कम महत्वपूर्ण तत्व था | यह जातिवाद पर आधारित था। सिद्धांत एक विशेष जाति (आर्यन जाति) की श्रेष्ठता में विश्वास करता था। |
| यह वर्ग व्यवस्था में विश्वास करता था और इसे संरक्षित करने का लक्ष्य रखता था। | यह वर्ग आधारित समाज को नस्लीय एकता में बाधक मानता था और इसे खत्म करने का लक्ष्य रखता था। |
| यह राज्य को राष्ट्रवाद के लक्ष्य को आगे बढ़ाने का एक साधन मानता था। | यह राज्य को श्रेष्ठ जाति के संरक्षण और उन्नति के लिए एक उपकरण के रूप में मानता था। |
| इतालवी प्रणाली आत्मनिर्भरता तक नहीं पहुंच सकी और बेरोजगारी को समाप्त कर दिया। | दक्षता और प्रभावशीलता के मामले में जर्मन प्रणाली इतालवी प्रणाली की तुलना में अधिक कुशल थी। |
| यह कम क्रूर थी, और इसमें कोई सामूहिक अत्याचार नहीं थे। | यह पूरी तरह से क्रूर, निर्दयी था और इसमें यहूदी लोगों के खिलाफ बड़े पैमाने पर अत्याचार किया गया था। |

यूरोप और दुनिया दोनों के लिए एक आपदा के रूप में नाज़ीवाद की जीत:

* **नाजी जर्मनी ने न केवल जर्मन राष्ट्र को नष्ट कर दिया, बल्कि पूरे विश्व को, विशेष रूप से यूरोप को, द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू करके और प्रलय को भड़काकर प्रभावित किया। इसलिए, इसे 20वीं सदी का सबसे विनाशकारी राजनीतिक शासन कहा गया।**
* **साठ लाख यहूदियों में से लगभग पचास मिलियन हताहत हुए जो हिटलर की नफरत का सीधा निशाना बने। द्वितीय विश्व युद्ध के शुरुआती दौर में नाजियों ने दुनिया के 15 मिलियन यहूदियों में से 33 प्रतिशत से अधिक को मार डाला।**
* **इस युद्ध ने लाखों लोगों को बेघर कर दिया; आधी से अधिक आबादी विस्थापित व्यक्तियों, शरणार्थियों, निर्वासितों, युद्धबंदियों और विस्थापितों के रूप में थी।**
* **इसने अर्थव्यवस्था को भी ध्वस्त कर दिया और यूरोपीय औद्योगिक बुनियादी ढांचे को नष्ट कर दिया।**
* **रूस को सामूहिक गोलीबारी, जबरन मजदूरी, बीमारियों, नाजी यातना शिविरों की खराब स्थिति और अकाल के कारण बहुत नुकसान उठाना पड़ा।**
* **नाज़ीवाद के अंत और द्वितीय विश्व युद्ध के अंत ने दो गुटों के साथ द्विध्रुवीय दुनिया को जन्म दिया। शीत युद्ध रूसी और अमेरिकी गुटों के बीच शुरू हुआ।**
* **इस सामूहिक नरसंहार के बाद, नरसंहार को अपराध मानने के लिए कानून बनाने के लिए दिसंबर 1948 में संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा एक नरसंहार अभिसमय का आयोजन किया गया था। मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा को भी अंतर्राष्ट्रीय कानून में शामिल किया गया था।**
* **नाज़ीवाद के कारण द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप, 2 मिलियन से अधिक महिलाओं और लड़कियों के साथ बलात्कार किया गया। बलात्कार अपराधों के परिणामस्वरूप महिलाओं और लड़कियों के सामाजिक मनोविज्ञान पर गंभीर प्रभाव नाज़ीवाद के अंत के लंबे समय बाद महसूस किए जा सकते हैं।**
* **युद्ध समाप्त होने के बाद, लाखों लोग विस्थापित हुए, और यूरोप को बड़े पैमाने पर निर्वासन का सामना करना पड़ा। शरणार्थियों के जत्थों को जबरन निष्कासित या स्थानांतरित कर दिया गया क्योंकि सीमाओं को स्थानांतरित कर दिया गया था।**
* **नाजी की दृष्टि जर्मनी के प्रभुत्व वाला यूरोप था, जिसे केवल युद्ध से ही हासिल किया जा सकता था। लेकिन इसके कारण हुई क्रूरता और अत्याचारों ने न केवल यूरोप बल्कि पूरी दुनिया को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से प्रभावित किया।**

18. फ्रांसीसी क्रांति के कारणों में दीर्घकालिक और संरचनात्मक कारकों के साथ-साथ तात्कालिक घटनाएं भी शामिल थीं। टिप्पणी कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

उत्तर:

प्रश्न को डिकोड करना:

* भूमिका में, फ्रांसीसी क्रांति के बारे में संक्षेप में लिखने का प्रयास कीजिए।
* मुख्य भाग में,
* आप फ़्रांसीसी क्रांति के विभिन्न दीर्घकालिक, संरचनात्मक और तात्कालिक कारण लिख सकते हैं।
* निष्कर्ष में, इसके प्रभाव का उल्लेख करने का प्रयास कीजिए।

**फ्रांसीसी क्रांति (1789-1799) को पूर्ण क्रांति भी कहा गया। यह क्रांति की एक श्रृंखला थी और फ्रांस में सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल की अवधि थी, जिसके परिणामस्वरूप राजशाही को उखाड़ फेंका गया और गणतंत्र की स्थापना हुई। यह सामाजिक व्यवस्था में मूलभूत परिवर्तन और संरचनात्मक बदलाव लाने के लिए कई कारकों, दीर्घकालिक, संरचनात्मक कारकों और तत्काल घटनाओं दोनों के परिणामस्वरूप हुआ।**

फ्रांसीसी क्रांति के पीछे कई कारण:

राजनीतिक कारण: **इस क्रांति का उद्देश्य यूरोप की सामंती सामाजिक व्यवस्था को नष्ट करना और उसके स्थान पर पूंजीवादी या बुर्जुआ सामाजिक व्यवस्था की स्थापना करना था।**

* **अठारहवीं शताब्दी में, लुई XIV का निरंकुश शासन था, जिसके पास केंद्रीकृत शक्ति थी और वह न्यायपालिका का मुखिया था।**
* **फ़्रांसीसी लोगों में लंबे समय से असंतोष था, जिन्होंने इस क्रांति में एक आउटलेट पाया, और उनकी क्रांतिकारी भावना को बुद्धिजीवियों के लेखन में अभिव्यक्ति मिली।**
* **अभिजात वर्ग के लिए कई विशेष विशेषाधिकार थे, जिन्होंने सुधारों को लागू करने के लिए राजा की शक्ति को भी चुनौती दी थी।**

सामाजिक कारण: **फ्रांसीसी समाज तीन सम्प्रदायों में विभाजित था; विशेषाधिकार प्राप्त लोगों ने शीर्ष दो सम्प्रदायों पर कब्जा कर लिया।**

* **कानून उन पर लागू नहीं होते थे, और उन्हें कर चुकाने से छूट दी गई थी, जिससे गैर-विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों में असंतोष पैदा हो गया था।**
* **कुल जनसंख्या का लगभग 1% बनाने वाले पादरी लोगों का कुल भूमि के 10% पर नियंत्रण था।**
* **इसे चर्च की व्यवस्था में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार था।**
* **फ्रांस की अधिकांश आबादी थर्ड एस्टेट की थी, जिसमें सामाजिक-आर्थिक विभाजन और उनके बीच असमानता है।**

Graphical user interface, text, application

Description automatically generated

* आर्थिक कारण: कर प्रणाली में भारी असमानता थी और सामंतों द्वारा किसानों का बड़े पैमाने **पर शोषण ने क्रांति को तीव्रता प्रदान की।**
* **कुछ इतिहासकारों ने दर्शाया कि एक किसान की आय का पांचवां हिस्सा राज्य कर चुकाने पर खर्च किया जाता था।**
* **अभिजात वर्ग के विरोध के कारण किए गए आर्थिक सुधार विफल रहे।**
* **फसल खराब होना, आर्थिक मंदी आदि जैसी घटनाओं ने लोगों में असंतोष को तेज कर दिया।**
* तत्कालिक कारण: आर्थिक दिवालियापन क्रांति के मुख्य कारणों में से एक था।
* **राजा के आर्थिक सलाहकारों, जैसे तुर्गोट, नेकर, आदि ने ऐसे सुधार किए जो मुख्य रूप से कुलीन वर्ग के हठ थे।**
* **क्रांतिकारी प्रबुद्ध विचारकों ने फ्रांसीसी क्रांति को केवल हिंसा के प्रकोप से अधिक बना दिया।**

**फ्रांसीसी क्रांति कई सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक कारकों के परिणामस्वरूप हुई, जो न केवल फ्रांसीसी समाज बल्कि बाकी दुनिया को भी प्रभावित करते हैं। इसने राजतंत्रीय व्यवस्था को एक गणतंत्र प्रणाली में बदल दिया, जिसने विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों को समाप्त कर दिया और सार्वजनिक और निजी क्षेत्र को अलग करने का विचार लाया। इसने प्रचलित सामंतवाद के खिलाफ पूंजीवाद की नई आर्थिक व्यवस्था की शुरुआत की। इसने दुनिया भर के उपनिवेशों में उपनिवेशवाद के खिलाफ आंदोलनों को प्रेरित किया, जबकि लोकतंत्र और स्व-शासन के लिए पूरे यूरोप में आंदोलनों का उदय हुआ।**

19. वैश्वीकरण के आगमन के बाद भारत में बदलती सामाजिक-सांस्कृतिक प्रवृत्तियों पर चर्चा कीजिए। (15 अंक, 250 शब्द)

**उत्तर:**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **भूमिका में,भारत में वैश्वीकरण के बारे में लिखने का प्रयास कीजिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **आप भारत में वैश्वीकरण के कारण विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन लिख सकते हैं।**
* **निष्कर्ष में, वैश्वीकरण के समग्र प्रभाव का उल्लेख करने का प्रयास कीजिए।**

वैश्वीकरण दुनिया के विभिन्न हिस्सों में विचारों, पूंजी, वस्तुओं और लोगों के प्रवाह के माध्यम से देशों के तेजी से एकीकरण की प्रक्रिया है। यह एक बहुआयामी अवधारणा है जिसमें राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्तिया हैं। मानव इतिहास के समय से ही वैश्विक संपर्क मौजूद हैं। 1991 में सरकार ने आधिकारिक तौर पर वैश्वीकरण के लिए दरवाजे खोल दिए जिसने समाज में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था को प्रभावित किया।

**भारत में वैश्वीकरण के कारण हुए सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन:**

* **राजनीतिक परिवर्तन: इसके परिणामस्वरूप राज्य की क्षमता का ह्रास होता है और एक** अधिक न्यूनतम राज्य का मार्ग प्रशस्त होता है जो कानून और व्यवस्था के रखरखाव और अपने नागरिकों की सुरक्षा जैसे कुछ मुख्य कार्य करता है। उदाहरण: संयुक्त राष्ट्र का उदय आदि।
* यह एक देश से दूसरे देश में नई राजनीतिक और प्रशासनिक प्रथाओं के परिवर्तन की ओर भी ले जाता है। उदाहरण के लिए, भारतीय संविधान ने विभिन्न देशों आदि से कई विशेषताएं उधार लीं।
* **आर्थिक परिवर्तन: वैश्वीकरण के उदय के बाद, व्यापार को विनियमित करने और विवादों को** हल करने के लिए आईएमएफ, डब्ल्यूटीओ आदि जैसे कई अंतर्राष्ट्रीय संगठन अस्तित्व में आए।
* इसने स्वैच्छिक और अनिवार्य दोनों तरीकों से दुनिया के विभिन्न देशों के बीच अधिक आर्थिक प्रवाह को बढ़ावा दिया।
* यह देशों के बीच आर्थिक और व्यापारिक बाधाओं को दूर कर व्यापार को सुगम बनाता है।
* इसने विश्व के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में पूंजी की गतिशीलता में भी सुधार किया और संवृद्धि और विकास को बढ़ावा दिया।
* यह कई देशों में बहुराष्ट्रीय कंपनियों में वृद्धि करता है और रोजगार पैदा करता है, तथा क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देता है।
* यह आबादी के बड़े हिस्से के लिए अधिक आर्थिक विकास और कल्याण उत्पन्न करता है और विकास को बढ़ावा देता है।
* लेकिन कुछ अर्थशास्त्रियों का तर्क है कि यह लोगों के बीच असमानता को बढ़ाता है और लोगों के कुछ वर्गों को ही लाभ पहुंचाता है।

**सांस्कृतिक परिवर्तन:**

* वैश्वीकरण विचारों, भाषा, परंपराओं, भोजन आदि के प्रवाह के माध्यम से देशों के बीच सांस्कृतिक पहलुओं को भी प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, भारत में अंग्रेजी एक आधिकारिक भाषा है, भारतीय खाद्य पदार्थ जैसे डोसा, इडली आदि दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं।
* यह पूरी दुनिया में एक समान संस्कृति के उदय के कारण स्थानीय परंपराओं और संस्कृति (समरूपीकरण) के लिए भी खतरा है।
* भारत में, पश्चिमीकरण और वैश्वीकरण की ताकतों के कारण, पारंपरिक संस्कृति, शिल्प भाषा आदि विलुप्त हो रही हैं।
* संगीत में, 'भांगड़ा पॉप', 'इंडी पॉप', फ्यूजन संगीत और यहां तक ​​कि रीमिक्स की लोकप्रियता में वृद्धि देखी जा सकती है।
* **सामाजिक परिवर्तन: वैश्वीकरण के कारण समाज भी परिवर्तनों के दौर का अनुभव कर रहा** है। यह लोगों के भोजन, जीवन शैली, संचार, मनोरंजन, जुड़ाव आदि को प्रभावित करता है।
* विभिन्न नई प्रौद्योगिकियों ने संचार को बदल दिया, नौकरियों और पारंपरिक रोजगार को संशोधित किया, बीपीओ की संस्कृति, ऑनलाइन खरीदारी आदि बढ़ रही है।
* बॉलीवुड फिल्मों का विदेशी बाजार बहुत बड़ा है; योग दिवस अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है आदि।
* स्टार, एमटीवी, चैनल वी और कार्टून नेटवर्क जैसे टेलीविजन चैनल भारतीय भाषाओं का उपयोग करते हैं। यहां तक ​​कि मैकडॉनल्ड्स भी भारत में केवल शाकाहारी और चिकन उत्पाद बेचता है, न कि बीफ उत्पाद।
* ग्लोबल फैशन आउटफिट और आइकॉन भी भारत में लोकप्रिय हैं।
* इसने परिवार के पारंपरिक सामाजिक मूल्यों (संयुक्त परिवार से एकल परिवार तक), विवाह (स्व-हित, अहंकार आदि का प्रभाव), सामाजीकरण, संबंध, त्योहार (वेलेंटाइन डे की लोकप्रियता आदि) आदि को कम कर दिया है।

वैश्वीकरण का लोगों के जीवन के हर पहलू पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है; भारत ने सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को देखा है। लेकिन वैश्वीकरण के प्रभाव के बाद भी, भारत ने विश्व मंच पर अपनी अनूठी सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान बनाए रखी है।

20. वैश्विक अंतर्संबंध अथवा ग्लोबल इंटरकनेक्शन कोई नई घटना नहीं है। भारत में वैश्वीकरण के विभिन्न आयाम क्या हैं? (15 अंक, 250 शब्द)

**उत्तर:**

**प्रश्न को डिकोड करना:**

* **भूमिका में, भारत में वैश्विक संपर्क अथवा संवाद के बारे में लिखने का प्रयास कीजिए।**
* **मुख्य भाग में,**
* **आप भारत में वैश्वीकरण के विभिन्न आयामों के बारे में लिख सकते हैं।**
* **निष्कर्ष में, वैश्वीकरण के समग्र प्रभाव का उल्लेख करने का प्रयास कीजिए।**

भारत कई हजार साल पहले भी विश्व से अलग-थलग नहीं रहा है। ऐतिहासिक आंकड़ों, कलाकृतियों, अभिलेखों आदि में सिंधु घाटी सभ्यता संस्कृति के समय विश्व के विभिन्न हिस्सों के साथ भारत के व्यापार के निशान पाए गए हैं। प्रसिद्ध रेशम मार्ग कई देशों को जोड़ता था जिनमें भारत एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। आधुनिक इतिहास में भी उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद ने विश्व को जोड़ा है और राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों का आदान-प्रदान किया है।

**भारत में वैश्वीकरण और इसके आयाम:**

* वैश्वीकरण एक बहुआयामी अवधारणा है, जो विश्व के विभिन्न हिस्सों में विचारों, पूंजी, वस्तुओं और लोगों के प्रवाह के माध्यम से देशों के तेजी से एकीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा देती है। इसमें विश्व भर में सामाजिक और आर्थिक संबंधों का विस्तार शामिल है। भारत में इसके कई अलग-अलग आयाम हैं।
* **आर्थिक आयाम: भारत में, राज्य (केंद्र) ने 1991 में अपनी आर्थिक नीति में कुछ बदलाव लाए और** नीतियों को उदार बनाया और भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व बाजार के लिए खोल दिया।
* इसने भारतीय व्यापार और वित्त नियमों को विनियमित करने वाले नियमों को लगातार हटा दिया और अर्थव्यवस्था के सभी प्रमुख क्षेत्रों (कृषि, उद्योग, व्यापार, आदि) में सुधारों की एक श्रृंखला देखी।
* इसमें कुछ शर्तों पर अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों जैसे अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) आदि से ऋण लेना भी शामिल था।
* कोका-कोला, जनरल मोटर्स, कोलगेट-पामोलिव आदि जैसी विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में अपना व्यवसाय स्थापित किया है।
* भारहीन/ज्ञान अर्थव्यवस्था भी तेजी से फैल रही है। उदाहरण: प्रौद्योगिकी, विपणन, बिक्री आदि।
* वित्तीय प्रणाली भी शेयर बाजार के आगमन, एफडीआई आदि के साथ विश्व स्तर पर संपर्क में आ गई है।
* **श्रम का विभाजन: श्रम का एक नया अंतर्राष्ट्रीय विभाजन उभरा है, जो बिखरे हुए स्थानों पर** लचीले उत्पादन की प्रणाली में स्थानांतरित हो गया है। तीसरी दुनिया के देशो में विभिन्न नियमित विनिर्माण उत्पादन और रोजगार किया जाता है।
* ILO जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का उदय अब मजदूर वर्ग के हितों की रक्षा करता है।
* **संचार: विश्व की दूरसंचार अवसंरचना ने वैश्विक संचार में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं।** टेलीफोन, फैक्स मशीन, डिजिटल और केबल टेलीविजन, इलेक्ट्रॉनिक मेल आदि ने विश्व भर के व्यवसायों, व्यक्तियों और सरकारों को पसंद किया है।
* **रोजगार: वैश्वीकरण का रोजगार पर असमान प्रभाव पड़ता है; शहरी केंद्रों के मध्यवर्गीय** युवाओं के लिए, वैश्वीकरण और आईटी क्रांति ने करियर के नए अवसर खोले हैं।
* इसने डिग्री के महत्व की जगह कौशल सीखने की अहमियत साबित की; युवा व्यक्ति कंप्यूटर भाषा आदि सीख रहे हैं और कॉल सेंटर या बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (बीपीओ) कंपनियों में नौकरी कर रहे हैं, सेल्सपर्सन आदि के रूप में काम कर रहे हैं।
* **राजनीतिक परिवर्तन: राजनीतिक सहयोग के लिए अंतर्राष्ट्रीय और क्षेत्रीय तंत्र का विकास।** यूरोपीय संघ (ईयू), दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ (आसियान), आदि क्षेत्रीय संघों की अधिक भूमिका का संकेत देते हैं।
* समावेशी वैश्वीकरण की अवधारणा में समाज के सभी वर्ग शामिल हैं।
* अंतर्राष्ट्रीय सरकारी संगठन का उदय, जिसने सरकारों में भागीदारी सुनिश्चित की और गतिविधि के एक विशेष क्षेत्र अथवा डोमेन को विनियमित करने या उसकी देखरेख करने की जिम्मेदारी दी, जिसका दायराअंतर्राष्ट्रीय स्तर पर है।
* **संस्कृति: वैश्वीकरण की शक्ति ने विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं और प्रथाओं के मेल से** संस्कृति को संशोधित किया है और एक समरूप वैश्विक संस्कृति का गठन किया है।

वैश्वीकरण के बड़ी संख्या में आयाम हैं; उपरोक्त के अलावा, उपभोग पैटर्न, महिलाओं की भूमिका आदि में भी बदलाव आया है। इन आयामों का देशों पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ता है। वैश्वीकरण के विविध और जटिल तरीके हमारे दैनिक जीवन को प्रभावित कर रहे हैं। भारत जैसे विकासशील देश नियम-आधारित व्यवस्था और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के लोकतंत्रीकरण के लिए अपनी आवाज उठाकर राष्ट्रीय हितों की रक्षा के उपाय कर सकते हैं।